

६५२९

अपने पूज्य पिता

Sethia Jain Library

BIKANER

Serial No. ६५२९

Index No.

स्वर्गदासी

लाला वृज लाल जी

— की —

शुभ स्मृति में—

प्रकाशक

लाला दुर्गादास जैन

बजाज धर्मी मण्डी,

पटियाला स्टेट.

श्री बौद्धराज्य नमः

पंथ होने पर बनला
पर न होने बनला नो

बने बान्धन के बन्ध
निसले दिन रेखा दो हो

जीवन चरित्र

श्री स्वामी खजान चन्द जी महाराज



सूचक—

लाला बालदेव जी बाला देवदास मुनिदेवदेव
देवदास देवदास देवदास मुनिदेव (पुस्तक)

द्वितीय अनुवाद—

श्री० स्वामीदेव जी देव. दे. देव. दे. देव. देव. देव. देव.
अनन्त देव

सूचक—

लाला बालदेव मुनिदेव देव देव
देव देव देव देव देव देव

प्रकाशक
लाला दुर्गादास जैन
बजाव, धूरी मण्डो,
पटियाला स्टेट

प्रथम बार	}	वीर सम्बत् २४७३	}	श्री ११
प्रति १०००		ई० १९४७		१।

मुद्रक
लाला केदारनाथ अग्रवाल
बी प्रिन्टर्स क्लिफ्टिड.
अम्बाला

अनुवादक का धन्य

यह बात सर्वविदित है कि जो भाषा मूल पुस्तक में होती है, वे हम के अनुवाद में प्रायः पूरे पूरे नहीं आते। परन्तु फिर भी मेरी ओर से यह पूरा पूरा प्रयत्न रहा है कि भाषा में भले ही फेर फार हो जाए, पर मूल भाषा बदलने न पावे।

इतना निवेदन करने के पश्चात् मैं यह बात देना आवश्यक समझता हूँ कि मूल पुस्तक साधारण जनता को दृष्टि में रख कर लिखी गई थी। किन्तु हम ने यह अनुवाद करते समय जहाँ साधारण जनता को दृष्टि में रखा है, वहाँ विशेष रूप से जैन जनता का ही ध्यान रखा है। इस का कारण यही है कि हिन्दी भाषा में इस पुस्तक को पढ़ने वाली अधिक जैन जनता ही होगी। फिर भी मैं ने ऐसा कोई भाषा प्रकट करने का प्रयत्न नहीं किया, जो साधारण जनता को अपवित्र हो। भाषा को सरल बनाने का भरसक प्रयत्न किया है।

इस पुस्तक में 'जैन धर्म के अनुयायी' नामक जो अध्याय है, हम ने कुछ छूट बढ़ा दिये गये हैं जो बिना आवश्यक जान पड़े। जैन धर्म पर अजैन विद्वानों की कुछ सम्प्रतिष्ठा भी जोड़ दी गई है।

मैं अपने उत्तर को समझ करने में पूर्व पुस्तक के मूल रचूँ लेखक श्रीमान् बारी राम साहनी जी की धन्यवाद देता हूँ कि जिसने मे इसका अनुवाद करने की आज्ञा प्रदान की है।

दिए इस पुस्तक के अनुवाद में कोई त्रुटि या असहजता हो गई हो, तो पाठकगण क्षमा करें।

—देव—

१८ म मार्च १९३८

१९३८ - १९३९

कृतज्ञता

लाला काशी राम जी चावला ने अपने शिक्षापूर्ण माहित में देश तथा जाति की अपूर्व सेवा की है। भिन्न भिन्न धर्म-मुवाइयों में परस्पर प्रेम बढ़ाने वाली इन की रचनाएँ देश भर में विशेष प्रसिद्ध हो रही हैं। गृहस्थ के विषय पर भी इन की हिन्दी तथा उर्दू की पुस्तकें जनता में आदर पा रही हैं। जनता ने इन को पढ़कर अति लाभ पड़ा है। साधारण जनता इन की इस सेवा के लिये अनीब कृतज्ञ है।

जैन समाज विशेष रूप से चावला जी का कृतज्ञ है। यह उनकी चतुर्थ रचना है जो कि उन्हीं ने अपने जैन भाइयों को प्रार्थना पर लिखी है। जैन धर्म के सिद्धान्तों की चावला जी बड़े सुन्दर ढंग से प्रतिपादन करते हैं, क्योंकि वे स्वयं अहिंस तथा प्रेम के सिद्धान्तों पर इष्ट हैं, इस लिये उनकी वर्णन शैली अपूर्व तथा मनोहर है। यही सिद्धान्त जैन धर्म की आधार शिक्षा है। चावला जी के एक एक वाक्य से सम्प, प्रेम तथा वात्मन्यता की सुगन्ध आती है। इन्हीं गुणों के आधार पर मानव धर्म ठहर सकता है। जो मनुष्य अथवा जाति उपरोक्त गुणों से रहित होती है, वह न तो अपने को लाभ पहुँचा सकती है और न ही देश को और समाज को तो उस में क्या लाभ हो सकता है।

हम समझते हैं कि चावला जी एक अनिव्यक्त व्यक्ति हैं किन्तु जो इन का बड़ा कृपा है कि जब जहाँ इन में कुछ ज्ञान है लिये प्रार्थना की गई, तो उन्होंने न इस कार्य का एक मंत्र भव्यकर किया इनका नहीं किया। इसका एक कारण तो उनका इनका न करने का स्वाभाविक गुण है और दूसरा जैसे कि कहा है स्वयं चावला जी 'नवेदन' में लिखा है, उन का जैन

एवं वे मौखिक मिथ्यान्तो मे प्रेम है । बाबला जी लोगन बाप के
 परिचित भाग्यो द्वारा भी जैन समाज की सेवा करते हैं ।
 तुषियाना के मौखिक सभारू मे उन के शिवाग्र भाग्य होने
 रहते हैं । भवा बिगेर कइसों पर भी वे अपना अनन्य
 समय जैन समाज की प्रधान करते रहते हैं । उर कभी दूसरे
 नगरो मे जाने है, तो वहां भी अपने सारगमिन् भाग्यो द्वारा
 वहां की जनता की लाभ पहुचाने है ।

नाग बागी राम जी मे जैन धर्म के इन समस्त और पर
 धारण नही बिदे, पान्थ कार्य रूप में वे इन धर्मो की पालने करने
 भागवान महाशेर के सबसे पुरातन हैं । यही कारण है कि वे किसी
 भी धर्म के विरुद्ध कुछ बहाना अनुचित मन्त्रने है । प्रत्येक
 धर्म में जो गुण हैं, उनका वर्तन करने मे कभी नही विचरिचाने
 यदि यह विचार सब धर्मावधारितो के हो जाए, तो कार्य हो
 सब का समान हो सकता है । पान्थ केवल गुण मे ही देने
 मात्र मे संगठन नही हो सकता, उर यह कि उन गुणो की
 करने समार कथन नही दिला जाए । सर्व प्रथम यह भेद हो
 गहन करने का मत । इन मे होना चाहिए की हमें किसी भी
 धर्म के निन्दनो, उनके दुष्टो और उनके विपक्षो पर अनुचित
 और निर दुष्टने कभी नुहानेकी न बरनी चाहिए, कतिप
 प्रत्येक धर्म की अपनी कानो मे लाभ करने का प्रयत्न करना
 चाहिए । कारण ही मे यह ही विशेष है कि हम लोग के प्रत्येक
 धर्म को समाज के लिए है

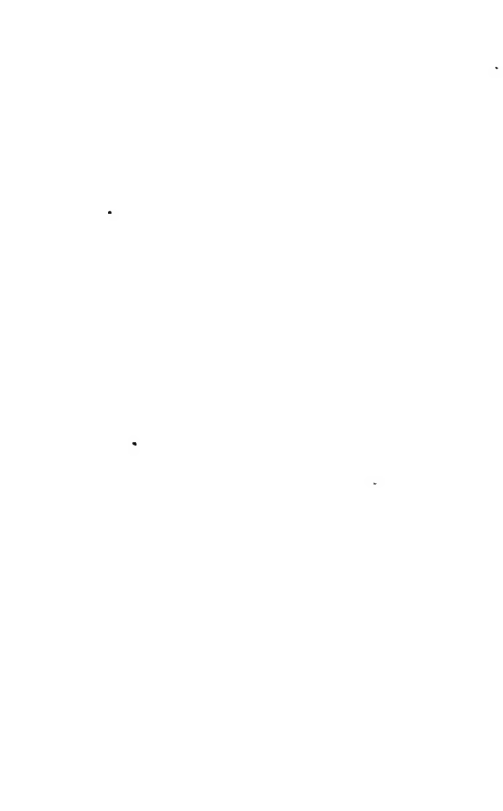
यह है कि बाबला नाग जी के नाम पर १८७८
 १९ बाबला १९११ के नाम पर बाबला लोने

धन्यवाद

मैं समझता हूँ कि जिन शासन प्रभावक, समाज सुधारक, पवित्र आत्मा, बाल जलचारी, प्रसिद्ध ब्रह्मा, दानयुग प्रवर्तक, १००८ पून्यवाद स्वर्गीय गुरुदेव श्री श्री स्वामी लखनपन्द ज महाराज के स्वर्ग विधारने के पश्चात् यदि उनके अमंजय उपकारी के बदले उनके भी चरणों में यह अद्यावधि भेंट न की जाती, तो हम कृतज्ञता के पाप के भागी होते ।

आवना श्री जलधन्यवाद तो मन्त्री जी ने कर ही दिया है और मैं भी उनको आशीर्वाद देता हूँ कि उन्होंने अपने समस्त लाला कर यह सेवा की है । पर महामुह्य के चरणों में भट्ठा के कुछ बढ़ाना अपनी शराहत और नेकदिशी का मय्य देना होता है । आवना श्री का पुढाराधे विशेष रूप से प्रार्थना है । और उन्हें मे इस कार्य को करके पुनर्गोमर्शन दिया है ।

आवना श्री के अतिरिक्त कविराज बगवन्नाथ भी अमरवा श्री, कवि श्री चन्दन आन श्री आदि महाराजान, मास्टर विद्या कर्गकोटी, कवि अबराम दाम रायमिह नगर, लाज्जा अमरना श्रीदो वधान मनानन धर्म समा नामा तथा अम्य लला समाचो और अन्य समाचो ने भट्ठा के कुल भेज कर अपने कृतज्ञता प्रकट की है । वे सब धन्यवाद के पात्र हैं ।



कलियुग का महान धर्म दान ही है

कंजूस कोयले के समान है
घोर

उदार व्यक्ति श्वेत हीरे के समान है ।

कोयले पर किसी प्रकार का रंग नहीं पड़ सकता
जानी महाशय पर ही धर्म का रंग पड़ सकता है ।

दान आत्म विकास का राजमार्ग है ।

विषय-सूची

	विषय	पृष्ठ
१	आवरणकोप निषेधन	१
२	प्रारम्भ	१०
३	जैन कीर्ति	१६
४	नास्तिक कीर्ति	३८
५	दुनिया में धर्मन कैसे हो	४८
६	संक्षिप्त जीवन	६१
७	धर्म कुरहली	७३
८	महाराज श्री की दीक्षा	७६
९	मौखिका	८६
१०	जैन मुनि	१०१
११	सच्चे मनुष्य	१२६
१२	महाराज श्री के चतुर्मास	१३८
१३	चतुर्मासों की मोटी २ बातें	१४१
१४	श्री महाराज का अन्तिम काल	१६३
१५	महाराज श्री के विशेष गुण	२००
१६	श्री महाराज की सेवा में समर्पित अभिनन्दनपत्र	२०७
१७	महाराज श्री के स्वर्ग सिंघारने पर अफसोस	२३५
१८	शिष्य परम्परा	२६६
१९	श्री महाराज जी के वरदेश	२७१
२०	जैन धर्म की शिला	३२५
२१	जैन धर्म के अनुयायी	३३७
२२	तार्किकों का निवाण काल	३३६
२३	जैन धर्म पर अजैन विद्वानों का सम्मतिपत्र	३४१

आवश्यक्रीय निवेदन

निम्नन्देह मेरा नाम जैनधर्मावलम्बियों की जनगणना में नहीं आता और न ही मैं अपने नाम के पीछे 'जैन' शब्द 'लपेटता हूँ, तथापि अहिंसा और सत्य की जोकि जैन धर्म के मौलिक सिद्धान्त हैं, मैं अपने जीवन का अङ्ग मानता हूँ। बाल्यावस्था में ही मुझे इन सिद्धान्तों से प्रेम है और अपनी योग्यता के अनुसार अबतक इन सार लेखों और भाषणों द्वारा प्रचार कर रहा हूँ। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि यदि संसार की आने वाले युद्धमंक्तों से, लड़ाई-झगड़ों से, और बलह-क्लेशों से बचना है तो हम इन्हीं सुन्दर सिद्धान्तों का अनुसरण करना पड़ेगा, अन्यथा कोई उपाय-दियाई नहीं देता, जो हमें आप दिन के इन झगड़ों से मुक्त करा सके। दूसरा विश्वव्यापी युद्ध अभी समाप्त हुआ ही है कि तीसरे महायुद्ध की सम्भावना की जा रही है। समाचार पत्रों में जान पड़ता है कि उस के कारण भी एकत्रित हो रहे हैं।

सिक्के दो युद्धों में जन तथा धन की इतनी हानि हुई है कि शताब्दियों तक भी उनकी पूर्ति न हो सकेगी। जिन देशों में युद्ध में विजय प्राप्त हुई है, उनकी आर्थिक दशा भी इतनी बराब हो गई है कि वे देश बिना सहाय्य लिये अपनी व्यावहारिक गये नहीं चला सकते 'विजयी देश'—रूस, अमेरिका और स्पेन के साथ विजय क्षेत्र के पट्टेबादे के लिये भारी मनभेद स्पष्ट हो गए हैं। साथ ही इन युद्धों ने उन्हे इतना धरती मारदा

का दिया है कि वे सभी अन्तःकरण में यही चाहते हैं कि अब और कोई युद्ध न छिड़े। इसी उद्देश्य को लेकर शान्ति सम्मेलन (conference) किये जाते हैं। उन में मित्र २ उपाय सोचे जाते हैं जिन से कि किसी प्रकार यह युद्ध की होली बन्द हो। परंतु वे होने वाले शान्ति सम्मेलन विफल होते दिखाई दे रहे हैं। इस का कारण यह है कि सम्मेलन में भाग लेने वाले अन्तःकरण से शान्ति नहीं चाहते। प्रत्येक अपने २ लाभ का ही विचार करता है। और ऊपर से सभी चिन्हाते हैं कि सेनाओं को घटा कर इतना कम कर दिया जाये कि जितनी सेना राज्य व्यवस्था के लिये आवश्यक हो, परंतु अन्दर ही अन्दर प्रच्छन्न रूप से प्रत्येक अपने सैन्य बल को बढ़ाने का प्रयत्न कर रहा है और नये से नये शस्त्र की खोज में लगा हुआ है। अतः केवल मन की प्रमत्त कर देने वाली ये बातें सब तक शान्ति स्थापित नहीं कर सकती कि जब तक हम अहिंसा और सत्य के सिद्धान्तों को नहीं अपनाते। यदि ऐसी ही दशा बनो रही, तो ये दो युद्ध तो बन्द देखे हैं, न जाने और कितने युद्ध इस ससार को देखने पड़ेंगे अहिंसा और सत्य-ये मानवता के मूलसिद्धांत हैं। इन पर जो नही चलता वह मानव नहीं, अपितु, दानव हैं, और दानवों मरना लड़ने भिड़ने में ही प्रमत्त रहते हैं।

इसी दानवता के कारण देश में साम्प्रदायिक दंगे हो रहे हैं कि वनेमान में हमारे इस अध्याने देश में पाव जम रहा है। अर्थात् चलने का विज्ञान हिला देने वाला हुआ है। इसके पश्चात् वही हाल बिहार में किया गया पुष्पेश्वर, बम्बई, टाटा अलीगढ़, आगरा आदि कई स्थानों पर अहिंसा का ही नाम लिया गया है। फिर पश्चात् के शहरों

बाजार के बाजार कमि की भेंट कर दिये गए और देहातों को
 जलाकर राख का ढेर बना दिया गया। यदि मुसलमान हिन्दुओं
 का मुहल्लान करते हैं तो इस से मुसलमानों की क्या लाभ पहुंचता
 है और यदि हिन्दू मुसलमानों की हानि करते हैं तो हिन्दुओं
 को इस से क्या प्राप्ति होती है। जन्म में हर प्रकार से हानि तो
 हम देना ही ही चाहते हैं, परंतु अपने साम्प्रदायिक पक्ष-पक्ष के
 कारण मनुष्य इन साम्प्रदायिक हानि को नहीं देख पाता।
 साम्प्रदायिक होने दोषही नफ़ारे हैं जोकि दोनों पक्षों को
 मुहल्लान पहुंचाती हैं। जन्म में जाकर दोनों पक्ष यह अनुभव
 भी करते हैं कि मनुष्यों के लिये इस प्रकार एक दूसरे का गला
 काटना उचित नहीं है। इन में परस्पर की वनमन मुहल्लाने की
 बजाए और सखिह बनना जाती है और हनाग भोज और भी
 दूर जा पहुंचा है। इसमें भारी उन तथा घन की हानि करने
 में पधारे ही इन लोगों की प्रतीत होता है कि दिन के लिये मिलान
 में दैनिक जीवन बिगड़ना भी दुःख है। जैन धर्म इस दुःख
 और जैन मिलान की रीति देता है जिन की आचार्यवरा आदि
 श्रद्धा देता और श्रद्धा श्रद्धा की अनुभव हो गयी है।

[illegible]

धर्म जहाँ व्यापारिक साधना पर जोर देता है वहाँ नगर-ग्राम तथा राष्ट्र के प्रति मनुष्य के कर्तव्य भी मले प्रकार बतलाता है। स्वयं भगवान् महावीर ने नगर, ग्राम तथा राष्ट्र धर्म को ऊँचा स्थान दिया है तथा इन ही का बलून राष्ट्रों में पहले किया और आत्म-साधना का उन के पश्चात्।

जैन गृहस्थ को यह आदेश है कि घात पठते ही वह संकल्प करे * "ऐ प्रभो! मैं अब अपने धन को समाज सेवा के लिये त्यागूँगा। वह दिन धन्य होगा जब कि मेरा समाज सेवा में लगेगा और दोन दुःखों के दुःख हटाने के लिये स्वयं होगा।" जैन शास्त्रों में लिखा है कि यदि कोई साथी बीमार हो या किसी और दुःख में पड़ा हुआ और आप उस की सेवा या सहायता कर सकते हैं अर्थात् उस दुःख दूर करने के साधन आप के पास हैं, परन्तु फिर भी उस से मुँह फेरे खड़े रह जाते हैं और अपने मन ही मन विचारने लग जाते हैं कि इस मनुष्य ने पहले मेरा कौन सा दिया है, कि मैं उसका काम करूँ या आगे को मुझे इस में लाभ पहुँच सकता है। यदि ऐसे भाव किसी के दिल में हों तो जैन धर्म के अनुसार वह व्यक्ति पाप वर्गीय माना जाता है।

जैन गृहस्थ का यह आदेश है कि जो भी

* "मया नृपमाणा नाहं कश्चिद् दत्तं नृणां च यदस्मिन्"

मया नृपमाणा नाहं कश्चिद् दत्तं नृणां च यदस्मिन्

लेने है और उन का अधिक ध्यान रखा जाति का सुधार का
 में होना है। परन्तु किसी भी जाति का धार्मिक व सामाजिक
 सुधार करना देश व राष्ट्र की मशी सेवा करना है। मनुष्य
 मानव रूपी देह के अङ्ग प्रत्यङ्ग है। शरीर के किसी को भी
 को ठाँक रखना उस को सेवा करना, शरीर की ही सेवा करना
 है। इसी प्रकार किसी भी जाति का सुधार करना, न केवल
 देश की अविनाश सारे संसार की सेवा करना है। जिस प्रकार
 शरीर के किसी अङ्ग का रोगग्रस्त होना शेष शरीर को भी दुःख
 बनाता है, उसी प्रकार किसी भी एक देश का दुःखी होना
 संसार को दुःखी बनाता है। महापुरुष किसी जाति की भेद
 तथा कमजोरियों को दूर करके उसे सुदृढ़ बनाते हैं।
 महापुरुष प्रत्येक मनुष्य को एक दूसरे से घृणा व द्वेष का
 में बचाकर उन को प्रेम की लड़ी में परो कर सामाजिक
 धार्मिक रूप में जोड़ा करने का उपदेश देता है तो वह महान्
 प्रत्येक व्यक्ति के लिये नमस्कारणीय एवं आदरणीय है।
 धर्म के सभी मायु स्वयं तो अहिंसा के कड़े प्रवर्तक का पावन
 ही है अर्थात् किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा आक्रमण करने पर
 कम बर हाथ नहीं उठाते, परन्तु माय का साथ अपने अनु
 र्तों को भी बिना कारण दिया न करने का उपदेश देते
 इसी कारणों से वे महापुरुषों का जीवन अविनाश क्षमता में
 'जैसे दृढ़ सदा रहता है। और फिर जब मुझे इस का
 ज्ञान रहा था। तब तो मेरे लिये यह और भी आ
 कर्षण बन गया है। इसी महापुरुष का जीवन अविनाश क्षम
 बनने के लिये हमें अपने पदों को ही नैतिक-वैदिक

जीवन से हम क्या २ शिक्षाएँ प्राप्त कर सकते हैं और उन शिक्षाओं को अपने जीवन में किस प्रकार लागू कर सकते हैं। जीवन नियमों-नियमों का पालन कर वह महापुरुष कहलाए और उन कदमों में उनका जीवन संकल रहा, उन नियमों में क्या विशेषता है और किस प्रकार उन्हीं नियमों पर चलकर हम भी अपने जीवन को ऊँचा उठा सकते हैं। इन्हीं बातों का ध्यान रखते हुए मैं ने सा. खदान बन्द जी महाराज का जीवन काँध लिया है। मैं नहीं कह सकता कि कहीं तक मैं अपने ध्येय में पूरा उतरा हूँ इस बात का निर्दोष तो मेरे दिल पठकगुरु ही दे सकेंगे।

महापुरुषों के जीवन ऊँचे में उधर उधर बढ़ते हुए हम लोगों के दिलों दीपक का काम करते हैं। उनके प्रकाश की महामयता में बलवान् पथ पर चलते हुए हम अपने उद्देश्य तक पहुँच सकते हैं।

महापुरुष अपने आचार व्यवहार द्वारा हमारे दिलों में गहना बन जाते हैं जिन पर सज्जन होते हुए हम अपने जीवन को संकल बना सकते हैं। उनके जीवन की एक एक पंक्ति हमारे दिलों में शिक्षादायक होती है। मैं आशा रखता हूँ कि दिल पठकगुरु भी महान् बन्द जी महाराज के इस अमूल्य जीवन वचन को पढ़ कर शिक्षाएँ प्राप्त करेंगे और उन पर प्रयोग कर अपने जीवन को संकल बना सकेंगे।



लेने हैं और उन का अधिक ध्यान उसी जाति का सुधार करने में होता है। परन्तु किमी भी जाति का धार्मिक व सामाजिक सुधार करना देश व राष्ट्र की सबसे सेवा करना है। सब जाति मानव रूपी देश के अङ्ग प्रत्यङ्ग हैं। शरीर के किसी भी अङ्ग का ठाक रखना उस की सेवा करना, शरीर की ही सेवा करना है। इसी प्रकार किसी भी जाति का सुधार करना, न केवल उस देश की अपितु सारे संसार की सेवा करना है। जिस प्रकार शरीर के किसी अङ्ग का रोगग्रस्त होना शरीर को भी दुर्लक्षित बनाता है, उसी प्रकार किसी भी एक देश का दुःस्वस्थ होना सारे संसार को दुःस्वस्थ बनाता है। महापुरुष किसी जाति की कुटुम्ब तथा कमजोरियों को दूर करके उसे सुदृढ़ बनाते हैं। वे महापुरुष प्रत्येक मत वाले को एक दूसरे से घृणा व द्वेष को से बचाकर उन को प्रेम की लड़ी में परो कर सामाजिक धार्मिक रूप से ऊँचा उठने का उपदेश देते हैं तो वह महापुरुष प्रत्येक व्यक्ति के लिये नमस्करणीय एवं आदरणीय हैं। उन धर्म के सभी साधु स्वयं तो अहिंसा के कड़े प्रत का पावन करते हैं। वे अर्थात् किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा आक्रमण करने पर भी उस पर हाथ नहीं उठाते, परन्तु साथ ही साथ अपने अनुयायी वर्ग को भी बिना कारण हिंसा न करने का उपदेश देते हैं। इन्हीं कारणों से ऐसे साधुओं का जीवन चरित्र लिखना मैं अपने लिये कल्प समझता हूँ। और फिर जब मुझे इस कार्य के लिये कहा जाय तब तो मेरे लिये यह और भी आवश्यक बन जाता है। किसी महापुरुष का जीवन चरित्र लिखने केवल उनके जीवन की घटनाओं को ही लेखनी-बद्ध कर देना नहीं है, बल्कि उनके जीवन की नीति व चरित्र को भी उजागर करना है।

जीवन से हम क्या २ शिक्षाएँ प्राप्त कर सकते हैं और उन शिक्षाओं को अपने जीवन में किस प्रकार उतार सकते हैं। जिन नियमोपनियमों का पालन कर वह महापुरुष कहलाए और जिन कारणों से उनका जीवन सफल रहा, उन नियमों में क्या विशेषता है और किस प्रकार वही नियमों पर चलकर हम भी अपने जीवन को ऊँचा उठा सकते हैं। इन्हीं बातों का ध्यान रखते हुए मैंने श्री स्वज्ञान चन्द्र जी महाराज का जीवन चरित्र लिखा है। मैं नहीं कह सकता कि कहाँ तक मैं अपने श्रेय में पूरा उत्तरा हूँ इस बात का विचार तो मेरे प्रिय पाठकगण ही दे सकेंगे।

महापुरुषों के जीवन ऊँचे में इधर उधर भटकते हुए हम लोगों के जिसे दीपक का काम करते हैं। जिन के प्रकाश की सहायता से कल्याण पथ पर चलते हुए हम अपने उद्देश्य तक पहुँच सकते हैं।

महापुरुष अपने आचार व्यवहार द्वारा हमारे लिये राजमार्ग बना गए हैं जिस पर सप्रसर होने हुए हम अपने जीवन का सफल बना सकते हैं उनके जीवन की एक एक घटना हमारे लिये शिक्षाप्रद होती है मैं आशा रखता हूँ कि प्रिय पाठकगण भी स्वज्ञान चन्द्र जी महाराज के इस अनूद्य जीवन चरित्र को पढ़ कर शिक्षाएँ ग्रहण करेंगे और उन पर आचरण कर अपने जीवन को सफल बनाएंगे श्री शम्भु ।



प्रारम्भ

जब से भारतीय संस्कृति का आरम्भ हुआ है, व लेकर आज तक के इस दीर्घ काल में अन्य देशों में संस्कृतियों उत्पन्न हुईं और विलीन हो गईं परन्तु वह भारतीय सभ्यता ही है जो मेरु के सदृश अकम्प्य खड़ी है सभ्यता में क्या विशेषता है जो अन्य सभ्यताओं से इसे र फरती है। वह विशेषता है इस की मर्याद की ग्रांथ तथा आदि सुख की ओर मुखाव।

वेद-काल की ही लें तो वेदों, ब्राह्मण ग्रन्थों, विशेषकर उपनिषदों में भारत की बुद्धि इसी आध्यात्मिक सुख-स्रोत में लगी हुई थी। हमें इस विषय में जाने की आवश्यकता नहीं कि जिस सिद्धान्त पर वह बुद्धि पहुँचती है वह ठीक है कि नहीं। ध्यान देने का विषय तो यह है कि हमारी बुद्धि भुक्ताव उस तत्त्व-ज्ञान की प्राप्ति करने में लगी हुआ था जिसे पराविद्या (लाकोत्तर विद्या) कहते हैं। यह विद्या शिष्य के आदि लौकिक विद्याओं से भिन्न है। इस विद्या में एक विशेष गुण है तथा अन्य विद्याओं में इसे एक विशेष महत्त्व प्राप्त है। इस का उद्देश्य बहुत ऊँचा है। इस का मार्ग भी अन्य विद्या के मार्ग से भिन्न है। भारत की बुद्धि इस बात को कभी स्वीकार नहीं करती कि इन पौद्गलिक वस्तुओं में ही वास्तविक सुख है। यह पुद्गल लक्षण लक्षण में बदलता रहता है। इन चमक भटकाली वस्तुओं से हानि वाले लक्षण-भंगुर सुख के लिये अ बहुमूल्य जीवन का मो देना कभी पसन्द नहीं करता और वह इसे अपना जीवन उद्देश्य मानने के लिये तैयार है।

ऐसे आनन्द की खोज में थी जो अनन्त और अक्षय हो ।
 ऐमे ज्ञान को प्राप्त करना चाहती थी जिसे पाकर मनुष्य
 तत्कृत्य हो जाए इसे फिर उनके लिए कोई कार्य करना शेष न
 जाए । इस की सब भाग दौड़ समाप्त हो जाए और वह ऐसे
 ज्ञान पर पहुँच जाए, जहाँ आनन्द ही आनन्द हो, दुःख नाम
 तत्र को भी न रहे, जहाँ शोक, निराशा, चिन्ता आदि समीप
 ही न फटक सकें ।

भगवान् बुद्ध इसी पथ के पथिक थे । भगवान् महावीर
 वामी ने भी इसी अक्षय स्थान को प्राप्त किया था और भव्य
 तीर्थों को इस स्थान के प्राप्त करने का उपदेश दिया । यह संसार
 क्या है ? जीव कौन है ? इसके संसार में आने का क्या उद्देश्य
 है ? इस का जीवन-लक्ष्य क्या है ? शारीरिक सुखों के होते हुए
 भी वह दुःखी क्यों हो रहा है ? दुःख का वास्तविक स्वरूप क्या
 है और इस से छुटकारा किस प्रकार पाया जाता है ? ये प्रश्न ये
 जिन की ओर हमारे महापुरुषों ने जनता का ध्यान आकर्षित
 किया था । इनके स्नेहपूर्ण उपदेश जनता के हृदय पर गहरा
 प्रभाव डाल गए । इन की मादा जीवन बिताने की शिक्षाएँ और
 उपदेश इन का त्यागमय जीवन एवं कठोर तपस्या अपना प्रभाव
 द ले बिना न रह सकी ।

महाराजा अशोक जैमा वर शासक अशोकचन्द्र से
 धर्म-अशोक बन गया । इस र राजकुमार और राजकुमारियां
 भिक्षु का आनन्द ले'ड साधुस्य का वेप पहन अहिंसा का
 मन्देश ले'र अदेशों अ पत्नी अचार राजा ने स्वयं स्थान
 स्थान पर नरक आत्मस्य और प्रेम का मन्देश मनाया और अपना
 नारा जीवन इस काय म बन गया इस से स्पष्ट है कि भारत

या। और इस सुख के आगे शेष सब सांसारिक सुखें
सुख समझा या।

अठारवी शताब्दि में हमारी सभ्यता में एक बार कि
गिरावट आती है। स्वार्थ, प्रमाद, और विषय-आसक्ति के खेत
निकल पड़े। वरार भावनाएँ उड़ गईं। दिन रात लड़ाई
होने लगी। एक दूसरे का विश्वास उठ गया। वे सिद्धान्त जो
हमारे जीवन को ऊँचा उठाने वाले थे, मुला दिए गये। जिन
का परिणाम यह हुआ कि हजारों मौलों से आने वाले योरप के
लानची व्यापारियों ने बन्दर-बाँट के नियमानुसार सारे भारत पर
अपना पाँव जमा लिया। परन्तु कुछ ही समय बीता या कि
कुछ एक समझदार व्यक्तियों ने सोच हुए भारतीयों को जगान
आरम्भ किया। जो लोग इस पाश्चात्य सभ्यता के नशे में चूर
चूर हो गए थे, उन्हें फिर इस सुन्दर और पवित्र सभ्यता का पाठ
पढ़ाया। इस युग के देवता महारमा गान्धी ने प्रेम, अहिंसा और
निष्काम सेवा का मधुर राग अजापा और विशाल जनता के
हृदय में स्वतन्त्रता प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा उत्पन्न की।

भारतीय सभ्यता की महान नदी मानवता के पवित्र
मिट्टाभूतों के स्रोत से निकल कर हजारों वर्षों का दीर्घ मार्ग काटती
हुई ऊँचाय और नीचाय में बहती हुई आई है तथापि इसका पवित्र
जल धारा में कौड़ी अन्तर नहीं आया। इस में कौड़ी मन्देह नहीं कि
यह जल वाग किमी किमी समय रतना दलदल में फँस गई तथा
किमी समय तो आसों में ओझल भी हो गई, परन्तु इस का
आन्धवनारिक जल-प्रवाह जग का न्याय बना रह, इस का पवित्रता
और निमज्जना में कौड़ी अन्तर नहीं आया। अतः वह जल वाग
जा कि मिट सा गई या फिर अपना मग निकालती है,

त, गन्धगी और मृग को रक्षा ले जाती है तथा फिर अपने विष और निर्मल जल से भरी हुई बहने लगती है।

यह जल क्या है? यह हमारे जीवन का पवित्र उद्देश्य है, यह हमारी आत्मा का व्यथन है, यह हमारा शुद्ध हृदय है जो इस चकराते हुए संसार में ध्रुव के सदृश अचल है, और आदित्य के अस्थिर भोग-विलास को लपेट ले चुका है। जो सत्ता का अनुभव कर लेता है उस के मन की सद चिन्ताएं निट जाती हैं। वह पूर्ण निर्भय होकर आत्मिक ज्ञान को प्राप्त कर लेता है और जन्म मरण के चक्राल से मुक्त होकर अक्षय सुख को प्राप्त कर लेता है।

यह गौरव इसी देश को प्राप्त है जिस ने ऐसे ऐसे महान व्यक्तियों को जन्म दिया, जिन्होंने न केवल अपने आप को उच्चाना जाना, हजारों मूले मटकों को मत्स्य भागों पर टांचा। जोते हुए लोगों को जगया, और उन्हें अपना मूला हुआ कर्तव्य सुझाया। फिर भी बहुत से लोगों ने अपने कर्तव्य को भुला दिया है, कुसुमाक्षी बन रहे हैं, सुभागों को छोड़ कर कुमार्ग पर चल रहे हैं जैसा कि एक बूढ़े कवि ने कहा है—

पड़ गया उन्हें धन खाने का लतका ऐसा
रक्कड़ होता है मनरंज को अग्न देखते हैं
राह वह चलते हैं लक्ष लगती है जिस में ठोकर
काम वह करने हैं जिस में डर देखने है।

इस देश-वर्तियों की दो अनोखी दशा है जब वे अपने

१. सुशा। २. हानि।

कर्तव्य को भूल जाते हैं, तो इनकी युद्धि पर ऐसा आचार्य जाता है कि उन्हें अच्छे घुरे की भी पहिचान नहीं रहती। अपने मित्र अमित्र का भी भान नहीं रहता जैसे कि कहा है—

सुतामद करते हैं गैरों की और आपस में लड़ते हैं।

युद्धी बरबादिया आती हैं युद्धी घर बिगड़ते हैं ॥

एक प्रकार से तो हम बड़े भाग्य-शाली हैं कि इनका जन्म इस आर्य देश में हुआ जिस की सम्प्रदाय मूल्य के सना चमक रही है, जिसका जीवन-उद्देश्य ऊँचा और पवित्र रहा है जो स्वायत्तता को एक रोग समझता आया है और दूसरों के शिष्टे मूल कुछ न्योच्छावर कर देने में अपना सुख मानता है। ऐसे देश में उत्पन्न होना एक गौरव की बात है। आत्र भी इन मयानक बलद-फ्लोरा लड़ाई मगाई के झमाने में सारा संसार भारत को और आरा की दृष्टि से देख रहा है कि यह भारत हमारा नेतृत्व करे। हमें जीवन-उद्देश्य बताए और इन आप दिनों के संकटों से मुक्त करे। परन्तु दूसरी ओर हम ऐसे अभाग्य प्रमाणित हो रहे हैं कि ऐसी सुन्दर एवं पवित्र सम्प्रदाय को और अपने महापुरुषों के शुभ नाम को उलझित कर रहे हैं। हम हम भूमि पर भार रूप बन कर, स्वार्थ और महालोभ में पँस कर अपनी सम्प्रदाय को नाम-शेष कर रहे हैं। आत्र हमारा जो प्रेम धन में हा रहा है, वह हमें अवन्ति की ओर लेजाने वाला है उसा कि एक कवि ने कहा है—

चान्दा के दुन्दुआ के बड़ले लाम्बा नन 'बक जात है

बिक जात है दुम्ता मूलन दुम्न का असमन्त बिन जात है।

इस की चादन बिन जाना है जिसे महज्वन बिक जाती है

लाम्बा रावन बिक जात है, लालच के बाजार में आकर ॥१॥

खान्दी के टुकड़ों के बदले, नाने खुदा बिक जाते हैं
 लुझां ने ईनां को बेचा, परिहृत ने खुतखाने बेचे ।
 भक्ति के काशाने बेचे, मदियों के अफसाने बेचे
 अपने धर्म की शान को बेचा, लालच के बाजार में आकर ॥२॥
 खान्दी के टुकड़ों के बदले, देश पुनारी बिक जाते हैं
 बिक जाते हैं धर्मपूजारी, लुटते पूंजी धर्म की सारी ।
 सब कुछ लुटा है घारी घारी, ऐसी अकल गई है मारी
 हम संनारी बिक जाते हैं, लालच के बाजार में आकर ॥३॥

यह नियम है कि जब महा लोभ आत्मा पर छा जाता है,
 धन एकत्रित करने के अतिरिक्त उसे और कुछ दिखाई ही
 देता और वह उसी में पागल सा हो जाता है, जैसे कि
 है—

शैतान से दिल को रख^१ हो जाता है
 दुराचार^२ इंसान को जूझ^३ हो जाता है ।
 हृद से जो सवा हो हिस्से^४ व खुद-बानी^५
 अक्सर है यही कि खन्त^६ हो जाता है ॥

इस समय हमारी यही दशा हो रही है । हमने अपने धर्म,
 नै, कर्म, हर्म^७, मर्म^८ का विश्विन्मात्र भी विचार नहीं ।
 यय वासना का बाजार गम है, दिल में हमारे धर्म है, बुद्धि
 हमारे भरम है, प्रेम और सेवा का भाव विलुप्त नर्म है ।
 ला इस दशा में हम अपने देश और सभ्यता को बहनाम
 में वान नहीं तो और क्या है - आओ! अब हम अपने

मतीत की रक्षा के लिये, अपनी सभ्यता को पुनः प्रकट करने के लिये, अपने पूर्वजों के नाम की सज्जा रखने के लिये इस देश को से आगे, अपने कर्तव्यों को समझें, अपने उद्देश्य को संभालें और फिर से अपने देश एवं धर्म की शान को ऊँचा करें। हमें अपने मूर्खों का ज्ञान तभी हो सकता है जब हम अपने शास्त्रों को अपने पुराने इतिहास की छाजनीन करेंगे और अपने महापुरुषों की जीवन्तियों का स्वाध्याय करेंगे। महापुरुषों के जीवन के लिये प्रकाशस्तम्भ है जिन के सहारे हम अपना मार्ग खोज सकते हैं और अपने जीवन-उद्देश्य को समझ सकते हैं। जिस मार्ग का जीवन चरित्र आप के सामने उपस्थित किया जा रहा है, ने अपने विविध जीवन द्वारा एक उदाहरण सदा दिया है। अपने मनोहर उपदेशों से हजारों मनुष्यों को इस धीरे धीरे सगा कर कल्याण मार्ग पर खड़ा है, देश व जाति के भेद उखाड़ने के लिये अपना जीवन अर्पण किया है तथा संकट सह कर लोगों के संकटों को दूर किया है।

यह माना कि ऐसे महान व्यक्तियों का जन्म किसी या सम्प्रदाय में होता है, परन्तु उनकी अमूल्य शिक्षाएं सब के लिये होती हैं। जैसे कि सूर्य उदय तो एक दिशा में होता है परन्तु उस का प्रकाश चारों दिशाओं के सम्पर्क में होता है। ऐसा ही महापुरुषों का उपदेश सब के लिये होता है। उन का लक्ष्य सार सार का भलाई करना होता है। वे नहीं उनके विविध जीवन की पदक तथा उनके महसूस करने का ध्यान करके आध्यात्मिक लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे।



जैन कौन है?

एक गहर ने पूछे जो जानूँ है इसलाम
 पार ने इरासी स किया उर स बलाम ।
 बोला कि हजूर मोहम्मद हों जिस ने
 ऐसी निश्चित की ऐन महद की सलाम ॥

एक बार मुझे एक दिन सभा में टहरने का अवसर
मिला। एक सज्जन ने मेरे वहाँ टहरने का प्रवन्ध बिना
मेरे ज्ञान के सभा के मैनेजर से पास पहुँचा। जिस भाई ने
मेरे टहरने का प्रवन्ध बिना मेरे, उसका नाम लेबर और अपना
विषय देकर वहाँ खड़ा होने के लिए प्रार्थना की। इस पर
मैनेजर ने मेरे साथ ही बातचीत हुई, वह नीचे लिखे
प्रमाण है

१९५६ : १९५७ '५६-५७' १९५७-५८

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ੲ-ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਭਗਤ ਅੰਗਦ ਕੀ ਸੇਵਾ ॥
 ਸੁਖੈ ਰਹਿ ਭਗਤ ਭਾਇ ॥ ਸਾਧਨੁ ਰਾਗੁ ॥ ਭਗਤ ॥
 ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

मैनेजर — दूध किमी की नहीं जानते । किराया आ
करेगा ।

मै — मैने यह तो नहीं कहा कि मै किराया न दूँगा
साधारणतया हाज़ान आपसे निवेदन किए हैं ।

मैनेजर — आप जैन हैं या अजैन ?

मै — मै जैन भी हूँ और अजैन भी ।

मैनेजर — यह कैसे हो सकता है । आप मुझ से हँसी करते
मै — हँसी करना मेरे स्वभाव और धर्म के विरुद्ध है । मैने
आपसे निवेदन को है ।

मैनेजर — आप तो विभिन्न मनुष्य प्रतीत होते हैं, एक ही म
लेन और अजैन दोनों कैसे हो सकता है ? मैने तो
तक ऐसा न देखा है और न ही सुना है ।

मै — आप देख लीं लोत्रिए और सुन भी लोत्रिए । जहाँ
मगवान बार के मन्दिर और सिद्धांशों का सम्बन्ध है
इन्हे दिखो ज्ञान में मानता हूँ और इन्हे जीवन में
क मित्त वचारात्ति प्रयत्न करता हूँ । मगवान और को मै
का सम्बन्ध पर माने जान लोत्रिए मानता हूँ । मैने
का जीवन विभिन्न लक्षण अपने आप को कृत्य-कृत्य
है इस 'मग' में मै जैन हूँ । परन्तु महा लक्ष आत्र
जैन मग, ज के आचार और व्यवहार का सम्बन्ध है ।
मै हूँ मग जो अजैन रहना चाहता हूँ

मैनेजर — आप न विश्वास के हाटने लग गए । स्पष्टतया

'क' क्या आपने मावक के बारह प्रश्न धारण किए

मैं - मैं सब का गढ़ा हूँ कि मैं इस योग्य बनूँ कि इस छोटी सी
धारा का हूँ। यान्त्रिक भी यद्यपि जगत् का एक सुन्दर
अनुभव करता हूँ।

हैम हीम—आप क्या ही बड़ी गरीब रहते हैं मैं हीम नहीं हूँ।
इस जगत् का सब कुछ मैं चाहें मेरा सम्बन्ध हीम
नहीं है।

मैं—यह मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। विशेष रूप से अब मैं
हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।
मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।

हैम हीम—मेरी बात यद्यपि समझ में नहीं है, यान्त्रिक इस में कुछ समझ
करा कर रहे हैं।

मैं—यह सब हीम मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।
मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।

हैम हीम—मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।
मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।
मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।
मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।

मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।
मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।
मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।
मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।

हैम हीम—मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।
मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ। मैं हीम कहूँ कि मैं हीम नहीं हूँ।

जिज्ञासु—तो आप यह बात मुझ पर लागू करते हैं।

—निस्सन्देह ! आप ने अपनी बातचीत और व्यवहार से जैन धर्म की शान को ऊँचा नहीं किया। मेरे हृदय में जैन धर्म के लिए जो श्रद्धा है, उसे धक्का लगा है। यद्यपि मैं यह भी समझता हूँ कि मेरे या आप के विचार या व्यवहार से किसी भी धर्म की सच्चाई या महत्त्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। मेरा यह कहना भी भूल है कि किसी एक मनुष्य के व्यवहार को देख कर उसके धर्म के विषय में कुछ निश्चय किया जावे। परन्तु फिर भी इस सत्य को भुलाया नहीं जा सकता कि वृक्ष उसके फलों से पहचाना जाता है। जिस धर्म के अनुयायी अपने धर्म की उन्नति चाहते हैं, उन्हें सर्व-प्रथम उस धर्म की श्रेष्ठता का यह प्रमाण देना चाहिये कि उन की सभ्यता उच्चकोटि की हो, क्योंकि मधुर वचन मनुष्यत्व की प्रथम कसौटी है।

मैनेजर यह बातें सुन कर चुप हो गए। मुझे ध्यान देने के विषय में बातचीत होाने लगी।

मैं ने उपरोक्त घटना एक जैन भाई के विषय में आपके सामने रखी है। इस का कारण यह है कि यह जीवन चरित्र जिस में उपरोक्त लेख शामिल कर रहा हूँ, एक जैन महात्मा का है। दूसरा कारण यह है कि जैन धर्म अहिंसा को परम धर्म मानता है। अहिंसा की नींव पर ही इस धर्म का प्रासाद खड़ा है। इस लिए जैन भाइयों को अहिंसा का पालन करना चाहिए और बिना कारण हिंसा नहीं करना चाहिए।

मैं यह जानता हूँ कि जैन शास्त्रों में जैन गृहस्थों के अहिंसा

यत्र को जैन पुनियों के अहिंसा यत्र के समान नहीं रखा है। मुनि पूर्ण रूप से अहिंसा का पालन करते हैं, परन्तु जैन धर्म के अहिंसा यत्र की सीमा यही है कि वे निर्दोष प्राणियों को हिंसा न करें। बिना कारण और बिना आवश्यकता के मनुष्यों एवं पशुओं के अहिंसा यत्र को शोभा नहीं देता। अहिंसा यत्र के कारण मैंने उरोग्र पट्टना नहीं लिखा है। परन्तु जैन धर्म की शान और मरुद्भय को ऐसा पट्टना कम करती है, जो मानवानी को आवश्यकता है। इसी दृष्टिबिन्दु से उरोग्र पट्टना पढ़नी चाहिए।

यह ठीक है कि ममय एवं दूसरे लोगों के आचार एवं व्यवहार का प्रभाव भी अवरय पड़ता है। और वर्तमान समय में मनुष्यों के चरित्र का काफी पतन हो चुका है। जैनों भी जलो प्रभाव में बच नहीं सकते, तो भी मैं यह अवरय कहूँ कि जैन धर्म का मुख्य-मिशन अहिंसा होने के कारण जैन धर्म के अनुयायियों को अन्य लोगों के लिए आदर्श बनकर दिखना चाहिए। इस बात का मैं विशेष ध्यान रखना चाहिये कि जिस व्यक्ति को हिंसा संस्था का मैनेजर या प्रबन्धक बनाया जावे, उस में ममय और मरुद्भय का होना आवश्यक है, क्योंकि उन का व्यवहार सदैव इस प्रकार होना है। व्यावहारिक ममय 'क' एवं 'क' ममयता का प्रथम कर्म है। जैना 'क' उक्त धर्म में बहू है।

धर्म अहिंसा के दृष्टि से अहिंसा धर्म का ममय

ममय धर्म अहिंसा के दृष्टि से अहिंसा धर्म का ममय

ममय धर्म अहिंसा के दृष्टि से अहिंसा धर्म का ममय

ममय धर्म अहिंसा के दृष्टि से अहिंसा धर्म का ममय

धर्म माले भड़वाई रहन्दे, ठाकर द्वारे ठग।

बिच नमोतां गहन कुसुतां पुल्हा आशिक रहन अलग ॥

ऐसा न हा कि जैन धर्म-स्थान भी इस कोटि में शामिल हो
जावे और कोई मनचला इन प्रपन्ध-कर्ताओं का भी हिस्सा न दे देवे।

मनुष्य के लिए पहला आवश्यकता यह है कि वह विना-
कारण नोकरता, कठोरता एवं असभ्य व्यवहार से बचे। एक
कवि कहता है—

इतना ही आदमी मे सनभिए कमाले फइम।

दितना कि एहतशाज करे वह फजूल से ॥

विना कारण व्यथे ही मनुष्य के दिल में अभिमान
और रागद्वेष व घुरे भाव पैदा हो जाते हैं। जब ये दोष
जतना पर अपना प्रभाव डालते हैं, तब मनुष्य के हृदय में
अशान्ति और चिन्ता पैदा कर देते हैं। जब जीवन की शान्ति
ही नष्ट हो जाती है, तब जीवन का आनन्द ही क्या? अतः
आवश्यक है कि मनुष्य अपने साथियों से अभिमान और
असभ्यता से व्यवहार न करे। इस लिए एक कवि ने कहा है—

ओ दशर ओ तारु के पुतले तुम्हे इतना घुरर।

तेरे हम जिन्स और फिर तू ही रहे इन से नफूर ॥

हो के इन्सा फिर करे तू जका इन्सान पर।

क्या यही है आदमियत तेरे हाँ ऐ बेशजूर ॥

किसी धर्म के दर्शन-शास्त्र का विकसित होना दूसरे
लोगों पर इतना अन्तः प्रभाव नहीं डालता जतना कि उसके
अनुयायियों का मनुष्यव्यवहार और संचरित्र। इस लिए एक कवि
कहता है—

मेरा कसूर हजने नासह करे मुआफ।

इमनान यह नही कि माये पे हा शमाफ।

। परन्तु इन में विरह कोई तदर्थी या भक्त अपने आप को
 ही और इनमें की छोटा समझता है, तो अच्छा है कि वह
 मि को छोड़ दे और अपने स्वभाव का सुधार करे। अपने
 भाव को नर और महानशील बनाने का प्रयत्न करे। इस
 दृष्टि एक कवि ने कहा है:—

आहं भुक्त मे माली नह.

॥ हं अस्मि नमः ॥

मन तो यह है कि कोई भी धर्म मनुष्य को दुरे व्यवहार से शिखा नहीं देता, अभिमान या घमंड का पाठ नहीं पढ़ाता। यदि हम इन धर्मों के नाम को ही देखें, तो इसमें विदित होता है कि प्रत्येक धर्म मनुष्य को मज्जनता, नम्रता और सदाचार से शिक्षा देता है। उदाहरण के लिए जैन शब्द के विषय में मैं तो पहले ही कहा जा चुका है। जिन शब्द का अर्थ है अपने मन और इन्द्रियों की वश में करना इसी प्रकार आर्य शब्द का अर्थ है उत्तम, स्रेष्ठ, मध्य। तुलसि का अर्थ है दूसरों की सम्माननी चाहने वाला। मित्र का अर्थ है, सेवक, सहाचारी। ईनाई का अर्थ है हथियार ईना का अनुयायी जिन का उपदेश है कि यदि तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ लगाए, तो दूसरा भी उसके आगे कर दो। अर्थात् इनके नम्र और महनशील बन जाओ। परन्तु व्यावहारिक जीवन में हमारा आचरण इस के विराम में क्या होगा कि आज धर्म का नाम बदनाम हो रहा है। धर्म का नाम कहते-गोहे "विश्वास" में सुख और शान्तिके लक्षण हैं। धर्म का अर्थ है भक्तिके अर्थ है सेवा। धर्म का अर्थ है स्वयंसेवा। धर्म का अर्थ है अपने कर्मों का फल प्राप्त करने हेतु। धर्म का अर्थ है अपने अधिकारों का उपयोग करना। धर्म का अर्थ है अपने अधिकारों का उपयोग करना।

में प्रमाणित करें कि धर्म को मानने वाले इतने भेद, व
और भेदभावों होते हैं।

मनुष्य की मनुष्यता की कमीटी उसका सदुपचार
सदुपचारा से रहित मनुष्य का राज के सुन्दर फूल के समान।

मीरत नहीं है जिस में यह मूलतः फूल है।

जिस गुण में यूँ नहीं, वह कागज का फूल है ॥

एक कवि ने लिखा है:—

मनु मनु नहीं तो फिर क्या है।

फूल में यूँ नहीं तो फिर क्या है।

बड़े लोग ऐसे जादू टाने की शक्ति में रहते हैं, जो
मनु मित्र बनना चाहते हैं जिस में वे दूसरा या प्रकाश
मैंने भी कहे अपने बग में कर सकें। फूल लाग इसी
क्यों की मानवानों में रहते हैं, इसी में वे सुखों की शक्ति
है जिस में वे छोटे भी नहिं को मानना बना सकें। यह
मनु मानें हैं -

इसका सब में करना सम्भव है तो यह है।

मनु मान की सम्मान सम्भव है तो यह है।

मनु यह है कि मनुष्य का गुण सब गुणों में ऊँच
इस का विशेष कारण यह है कि यह मान बड़ा इमान
इस का विशेष कारण यह है कि यह मान बड़ा इमान
इस का विशेष कारण यह है कि यह मान बड़ा इमान
इस का विशेष कारण यह है कि यह मान बड़ा इमान
इस का विशेष कारण यह है कि यह मान बड़ा इमान
इस का विशेष कारण यह है कि यह मान बड़ा इमान
इस का विशेष कारण यह है कि यह मान बड़ा इमान

इस का विशेष कारण यह है कि यह मान बड़ा इमान
इस का विशेष कारण यह है कि यह मान बड़ा इमान

अतः सद्व्यवहार हृदय से होना चाहिए। सच्चा सदाचार सर्वोत्तम गुण है:—

जब मिले जिससे मिले दिल खोलकर दिल से मिले ।
इस से बढ़कर और खूबो कोई इन्सां में नहीं ॥

हां तो मेरा विषय यह था कि जैन कौन है ? इस का उत्तर निवेदन कर चुका हूं कि जैन वह है कि जिसे अपने आप पर कायू हो जिनके मन वचन और काया अपने वश में हों । जैन भावक का वारह व्रत धारण कराये जाते हैं । इस का भी यही स्वरूप होता है कि वह अपने मन, वचन और काया पर विजय प्राप्त करे और सपनी जाग्रत व्यतीत करे इन्हें कुन्तारग-गामी न बनने दे और इन का सदुपयोग करे । यहां इन व्रतों को संक्षेप से लिख देना अनुचित न होगा ।

- (१) विना कारण जान-बूझ कर किसी जीव को न मारना और न ही उसे बध्द देना ।
- (२) यथाशक्ति अधिक न अधिक सत्य बोलना और झूठ बोलने से परहेज करना ।
- (३) कोई ऐसी वस्तु न लेना जिन पर अपना अधिकार न हो । अर्थात् स्थूल चोरी न बचना ।
- (४) अपनी स्त्री के अतिरिक्त किसी अन्य से अपवित्र सम्बन्ध न रखना ।

५) घन शालन पधान परिग्रह का लोभ न करना इन को मनाई करने ।

६) अपने कर्म + न अंग अंग इन के मयादा करना

- (४) श्वात पीने, पढ़तने तथा अन्य तीव्र नोपयोगी कामों को बर्खास्त करना। अर्थात् संयम में रहना।
- (५) व्यर्थ बातें न करना और नहीं व्यर्थ काम करना।
- (६) प्रति-दिन कम से कम एक घंटा गूढ़ हृदय में धर्म करना।
- (७) अपने कमरे में एक बार व्यायाम करना अथवा दिन भर श्वात में विनाश।
- (८) पढ़ाई अथवा और जगहों के दिन अधिकतर समय में कम से कम एक बार अर्थात् चौबीस घंटे के साथ १-२ घंटे श्वात पूर्ण विनाश।
- (९) मातृ महत्त्वों की आशा वानों आदि से संतुष्ट और जीन दुःखों का महायत्न करना।

ਸ੍ਰੀ ਭਗਤ ਸੂਰਜ ਸਿੰਘ ਜੀ । ਉਨ ਦੀ ਪਰੋਖ ਪਤੀ
ਸ੍ਰੀਮਤੀ ਸ਼ਰਣ ਕੌਰ ਜੀ ਦੀ ਸੰਤੁਸ਼ਟੀ ਕਾ ਕਰਮ
ਕਰ ਕਰ ਕਰ ਕਰ । ੧੭ ਅੰਗੁਲ ਪਾਸ ਕਰੇ ।

महाराष्ट्र राज्य सरकार
मुंबई

[illegible]

वात चीत करने की कला में कुशल होना महान गुण है । जैन मनुष्य में यह गुण नहीं है, यह किसी भी मर्मा या मानासिक में अदर प्राप्त नहीं कर सकता जो मनुष्य शील चातक कला में कुशल नहीं है, उस की पुण्य और ज्ञान अपूर्ण है । इस गुण से वंचित रहना दुर्भाग्य का चिह्न है । कलरना कीर्ति मि मिमा गुण अवसर पर मृत्यु और राग का वान नोन करना और इन के विरुद्ध शोक मर्मा में विवाह आदि का घटना का वान प्रारम्भ कर देना स्वयं हमों का पात्र बनना है । इस प्रकार की मूर्खता मनुष्य को कई प्रकार की विपत्तियों में डाल सकता है । जो मनुष्य अवसर और आवश्यकता के अनुसार वात चात करना जानता है, उस के जीवन का बहुत सा भाग सुखी और सरल बन जाता है ऐसे मनुष्य से मर्मा लोग प्रेम से मिलते हैं और प्रत्येक का दरवाजा उस के लिये खुला रहता है । मर्मा लोग उस से मित्रता करने और उस में वात चीत करने में अपना गौरव मनाने हैं । फिर इस कला से लाभ उठाने का प्रयत्न क्यों न किया जाए । क्या हमें अपनी उन्नति और प्रगति की आवश्यकता नहीं है ?

जैन शास्त्रों में वात चीत का दंग और सभ्यता सिद्धान्त के लिए बड़ा उपदेश दिया गया है परन्तु उस का वर्णन किसी और स्थान पर किया गया है । यही पर कुछ और वाता का वर्णन किया जाता है :—

१. कम बोलना अच्छा है । इस से एक तो हमारा अमूल्य समय नष्ट नहीं होता, दूसरे विभाग नहीं थकता । प्रत्येक वात का उचित अवसर दाम्बर कहना ही लाभ देता है ।

बिना अवसर और आवश्यकता के कोई बात करनी चाहिए।

२. आवाज़ न तो बहुत ऊँची और न ही बहुत, बराननी चाहिये।

मरल और मीचे ढंग से धीरे धीरे अपने विचारों पर ध्यान दिया जाये। धुमा किया कर कोई बेबीदा की को आये। यह भी ध्यान रखना चाहिये कि जब कोई पूछी जा रही हो तब तक मुह न खोलें वरन् तबका प्रश्न समझ न हो आये।

४. कभी कोई बात न कहे जिस से सुनने वाले की ईर्ष्या और जमके माये पर बल पड़ जायें।

५. बात की बहुत न बढ़ाये जाये। चम्द शब्दों में ही तात्पर्य स्पष्ट कर देना चाहिये। अथवा कम चाहिये कठिन बात को हृदयरण दे कर रख देना चाहिये।

६. बाजार में गली के किनारे पर या घर के दरवाज़े पर अधिक देर तक बातें न की जायें।

७. भने ही आप दूसरे में अच्छा जानते हो, परन्तु भी बात बाट कर अपनी बात कहने से निर शी करनी चाहिये।

८. अनायास शब्दों का न बालन जाना चाहिये। अपने को भी बालन का अवसर देना चाहिये।

९. किसी का दुगाई न करना चाहिये। और न ही किसी के दुगाई से कुछ अवयव बातें करना चाहिये।

बात चीत को झूठ से प्रभावशाली बनाने का प्रयत्न न करना चाहिये ।

सदैव वयोंगी बात अवसर के अनुसार कहनी चाहिये । पूछने पर बोलना चाहिये । जब किसी अन्य व्यक्ति से कुछ पूछा जावे, तो स्वयं मौन रहना चाहिये ।

किसी जाने वाले को तर्फ अँगुली से संकेत करके बात चीत न करनी चाहिये ।

बोलते समय गरदन को इधर उधर न घुमाना चाहिये । और न ही सिर को अधिक झुकाना चाहिये एवं बार बार सिर को न हिलाना चाहिये ।

बोलते समय बार बार धुक्का न चाहिये न ही दूसरी तर्फ मुँह करके बातें करना चाहिये और न मुँह बढ़ाना या सिकोड़ना चाहिये ।

बात करते समय मुँह को दूसरे के मुँह के न बहुत निकट ले जाना चाहिये और नही बहुत दूर, अपितु सम्यक्ता से काम लेना चाहिये ।

अपने साथी को तर्फ टिब्बटि की लगा कर न देखना चाहिये और नही बात चीत करते समय किसी और काम में लगना चाहिये ।

गन्दा हसी और असम्यक्ता-पूर्ण बात चीत न करनी चाहिये । न ही कभी गाली या गन्दे शब्दों का प्रयोग करना चाहिये ।

नाथे पर बल हात कर बात चीत न करनी चाहिये, प्रसन्नचित्त, प्रवृत्तिन मुख एवं नधुर और सुनीने शब्दों

हो किसी को डराता है। कभी कृतघ्न नहीं होता। सत्य चानता है। लोभ से दूर रह कर सन्तोष को धारण करता है। उसका हृदय साहस और लग्न से सुशोभित होता है। उसे मुँह नहीं मोड़ता। सांसारिक सुख से घृणा करता है। संयम की शरण लेता है।

इस प्रकार सच्चा मनुष्य वही बन सकता है जो धर्म के रस को समझ ले। धर्म वही है जो जैन भावक के १२ प्रवृत्तों में दर्ज है। निस्सन्देह ये १२ प्रवृत्त एक जैन धर्मानुयायी के लिये नियत किये गए हैं, परन्तु सत्य यह है कि ये प्रवृत्त प्रत्येक मनुष्य को सच्चा मनुष्य बनाने वाले हैं। जो इन्हें धारण करेगा, वह मनुष्यत्व के गुणों से भरपूर हो जावेगा।

स्वर्गीय श्री खजान चन्द जी महाराज लगातार पूरे ४२ वर्ष तक इसी प्रयत्न में लगे रहे कि जैन धर्म के अनुयायी सच्चे जैन अर्थात् सच्चे मनुष्य बन जावें। वे अपने कर्तव्य को समझें और उसे पालन करने का पूर्ण प्रयत्न करें। जिस के फलस्वरूप इन के जीवन में प्रकाश और सौन्दर्य का सम्मिश्रण हो। जिस से वे अपने धर्म और पूर्वजों के नाम को रोशनी करें। महाराज श्री को इस पवित्र उद्देश्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई जिस का विवरण ज्ञाने किया जावेगा। क्या ही अच्छा हो कि हम भी उपरोक्त बारह प्रवृत्तों को धारण करके अपने जीवन को सफल बना सकें, ताकि अन्तिम समय पश्चात्ताप न करना पड़े।



नास्तिक कौन है ?

देवानुयायी साधारणतया बार फिरकी को नाशिक
हैं अर्थात् जैन, बौद्ध, बारबाद और देव समाजी ।
कहने के आ कारण बताए जाते हैं, उन में से एक तो
कि वे ईश्वर का नहीं मानते । दूसरा यह है कि वे जैन की
प्रमाण नहीं मानते । परन्तु यह बात मुक्तिमुक्त प्रतीत नहीं होती
जैन लोग मानते हैं नाशिक कहने से इन्कार करते हैं कि
जैन की बात का समर्थन करने के लिये जो मुक्तियों देते हैं,
का बड़ा मन्त्रिण वर्णन करना अन्याय न होगा । मेरा मत है
है कि जब समय यह नहीं है कि हम परस्पर एक दूसरे
नाशिक और बहूत कह कर एक दूसरे से दूर दूर रहें और
के आ बात । हम समय लगाकर और मेहनत को आभार
है । आमतौर पर कहा है, वह हमें हम बात के लिये नि
का रहा है कि हम अपने विचारों का सूत्र कर एक दूसरे
कहते हैं । अतः एक दूसरे के लिये निरर्थक, अनादित हो कर
हैं । निरर्थक बातें करने को निरर्थक कहना चाहिये ।
हम को जैन के बहूत का बहूत के अर्थ प्रत्यक्षीय है
हैं । इस बात का अर्थ यह है कि हमने ही को बहूत है
हमारे अर्थ है ।

हिन्दु जाति बड़ी बड़ी विपत्तियों और आपदाओं का सामना करने में भी नष्ट नहीं हुई। कई दूसरी जातियाँ और नभ्यताएं विकास में ही बर नभाय हो गई। परन्तु हिन्दु जाति और हिन्दु सभ्यता ज्यों की त्यों विद्यमान है; यह विचार श्रेष्ठ है परन्तु इस विषय में एक बात हृदयगम करने की आवश्यकता है।

निम्नन्देह भूत काल में हिन्दू जाति कायम रही, क्योंकि और इस को हड़प जाना चाहते थे। वे इसके अस्तित्व को मिटाना चाहते थे। किन्तु यदि हिन्दु जाति स्वयं अपने नाश के लिये कटिबद्ध हो जाये, तो उसे कौन बचा सकता है। इस समय हिन्दु जाति की यही हालत है। यह स्वयं कहीं विभक्त हो कर, कहीं छुआछूत देखाकर और कहीं स्वार्थ के बशीभूत होकर ऐसे कुमार्ग पर चल रही है कि अब विरोधियों को इसे नष्ट कर देने में किसी विशेष परिश्रम की आवश्यकता न पड़ेगी। शत्रु का सामना किया जा सकता है और उसे पराजित भी किया जा सकता है, परन्तु अन्दर का रोग मनुष्य को अन्दर ही अन्दर समाप्त कर देता है।

जिस लकड़ी को अन्दर से घुन खा जाए, वह जरा सी ठोकर से टुकड़े टुकड़े होकर पृथ्वी पर गिर पड़ती है। हिन्दु जाति ने अपने को घुन लगा लिया है। सब से बड़ा घुन का कीड़ा जाति-अभिमान है। जब तक यह कीड़ा हमारे मस्तिष्क से नहीं निकलता, हमारी रक्षा कठिन है। दूसरा कीड़ा धार्मिक विरोध के कारण एक दूसरे को कुचलने का प्रयत्न है। उचित यह है कि हम इन कीड़ों का नष्ट-भष्ट करें।

अब उन पुक्तियों का जो जैन धर्मानुयायी अपने नास्तिक सिद्ध करने के लिए देते हैं, यहाँ बखन किया जाता

मिथ्यागत के अनुसार नास्तिक हमें कहते हैं जो
अस्तित्व में जो। मोक्ष मार्ग में विश्वास न हो।
अपेक्षित नियम ठीक मान लिया जाये, तो केवल चरित्र
नास्तिक रह जाते हैं। जैन धर्म और जैन शास्त्रों का
कानून वास्तव में ज्ञान होगा कि जैन धर्म इन वस्तुओं
मानता है। अब रही दूसरी बात वेदों को न मानने की।

हिन्दु धर्म में कई ऐसे सम्प्रदाय हैं जो वैदिक
को नहीं मानते। ब्राह्मणार्थ सृष्टि की उत्पत्ति के
अभिहित। कपिल मुनि तो इस सिद्धान्त को इसी
वाक्य की ओर ईश्वर का वर्णन करता है जो सृष्टि का
वैराग्य भी अनेक सिद्धान्त को नहीं मानता। स्वामी
तो इसे आध्यात्मिक कहते हैं। मीमांसक भी इसी
को नहीं मानते। मीमांसका शास्त्र में तो इस के विरुद्ध बड़ी बड़ी
साधक वृत्तियाँ भी दी गई हैं।

केवल दो हिन्दु धर्म—नैवास्तिक और
अज्ञान के अनेक सिद्धान्त को मानते हैं।
और अनेकानु को अनेक ही मानते हैं। यदि ईश्वर
सृष्टि का अर्थ न मानने के कारण ही जैन धर्म को
कहा जाये, तब अनेक हिन्दु धर्म भी इसी बोद्धि में
हैं। आध्यात्मिक धर्मों की समीक्षा के माध्यम से
अनेक ही धर्म अनेक। अनेक ही धर्म अनेक। मोक्षमार्ग
अनेक। अनेक धर्मों का अर्थ अनेक का अर्थ। अनेक
अनेक हिन्दु धर्मों में एक बात है जो जैन धर्म के
है अनेक का अर्थ अनेक अर्थ है अनेक धर्म अनेक
अनेक धर्मों का अर्थ अनेक अर्थ है अनेक धर्म अनेक

यों का विचार करने की आवश्यकता नहीं। यहाँ तो केवल सिद्ध करना है कि इस विषय में जैन शास्त्र और अन्य हिन्दुओं का सिद्धान्त एक ही है। इस लिये ईश्वर की सृष्टि कर्ता न होने के कारण जैन धर्म की नास्तिक कहना अन्याय है।

मिदान्त बौद्धों के सूत्र १६१० में पाणिनि ऋषि की भाषा के अन्वय ४ पाद ४ सूत्र ६ का अर्थ लिया गया है कि तब वह होता है जो परलोक को मानता है और नास्तिक वह है जो परलोक को नहीं मानता। जैन धर्म परलोक को मानता है, इस लिये उपरोक्त हिन्दु ग्रन्थ के बयानानुसार वह नास्तिक नहीं।

जैन धर्म का दूसरा प्रसिद्ध सिद्धान्त कर्मवाद है। जैन मानता है कि जब मनुष्य किसी कार्य को करने का विचार करता है, तब भी वह उस कर्म का कर्म माना जाता है। भावकर्म कहते हैं। जब मनुष्य ब्रह्मा से उस कार्य को कर लेता है, तो उसे पुण्य कर्म कहते हैं। जैन धर्म मानता है कि कर्मों परमात्मा-कामात्मा-वर्मात्मा जीव के अन्तर का कार्य बन जाती है, जो जीव उन्हें स्वयं करे या दूसरों को करने की प्रेरणा करे अथवा जो वे बिचे कर्मों का समर्थन करे। फिर बिचे हुए कार्य जीव के समर्थक रहते हैं अथवा बिचे हुए कर्मों, उपकार का अन्तःकरणों के माध्यम से करते हैं। जैन धर्म यह भी मानता है कि जब जीव कर्मों का एक कर देता है, तो उन्हें पुण्य और पुण्य ही कर माना बन जाता है। फिर वह कामात्मा जीव और कामात्मा को मान लेता है। जैन धर्म इसका या परमात्मा का इस रूप में मानता है। परमात्मा का ईश्वर का भाव परमात्मा स्वयं मानता है। जैन धर्म न हिन्दु धर्म के नास्तिक धर्म का अन्तःकरणों को मानता है।

त्रेन चरमे मुक्त-आत्माओं का फिर संसार में जन्म
स्वीकार नहीं करता। ऐसे ही हिन्दु धर्म की प्रायः सभी
लुप्त जीव का संसार में दोबारा जन्म पारण करना उसे
त्रेन चरमे अवतारबार् का समर्थन नहीं करता।

इस से इनकार करता है। अब मोक्ष के स्वरूप
की दृष्टि से त्रेन चरमे मानता है कि मोक्ष प्राप्त करने
ज्ञान सम्पन्न करने और और सम्पन्न-व्यक्ति की प्राप्ति
है। अर्थात् जन्मों के वास्तविक स्वरूप को
जानने स्वरूप में विश्वास करना और हाथों की
अनुसार वास्तव जीवन स्वीकार करना, ये तीनों विषय
हैं। वैदिक धर्म में कई सम्प्रदायों का विश्वास अर्थात्
हाथों की प्राप्ति के बिना प्राप्ति सम्भवता है, यह केवल
और कई केवल प्राप्ति का ही। परन्तु त्रेन चरमे इन
जन्म/कर्म सम्भवता है। इस में तो त्रेन चरमे तथा जन्म
विश्रुतियों में कोई विशेष सम्भव नहीं है।

त्रेनचरमे देवताओं के अस्तित्व का सम्भव है।
जन्म में का कुछ और कुछेक प्राप्ति देवता माने गये हैं।
जन्म में केवल जन्म से मुक्ति नहीं मानता। मुक्त
का देवताओं के बिना अस्तित्व का जन्म अनुचित सम्भव
कल्पना का सम्भव है। जन्म के जन्मों से प्राप्ति होने
के सम्भव सम्भवता है। त्रेन चरमे जन्म का ही जन्म होने
एक सम्भव सम्भवता है। जन्म जन्म सम्भवता का ही
सम्भव है। इस जन्म के जन्म सम्भवता का सम्भवता है।
इस सम्भव सम्भवता का जन्म सम्भवता है। इस सम्भव
सम्भवता का जन्म सम्भवता है। इस सम्भवता का जन्म सम्भवता है।

इस से बढ़कर वेद की निन्दा क्या हो सकती है। जिन वेदों को सूत्रप्रमाण मानने के सम्बन्ध में गुरुमत प्रचार के लिए। सन् १६२२ के संस्करण के पृष्ठ ६४१ में लिखा है कि "वेद शास्त्र के सम्बन्ध में यह विश्वास रखना कि वे ईश्वरी वचन हैं और ग्रन्थ सादृश्य की तरह परमात्मा का ठीक रूप कराने वाले हैं, तो यह एक भूल है"। इस से बढ़कर क्या प्रमाण हो सकता है कि सिख वेदों को सूत्रप्रमाण नहीं मानते। इस विचार से सिख धर्म भी नास्तिक है। परन्तु इन्हें नास्तिक नहीं मानते। फिर जैन धर्म के साथ ही यह बुरा व्यवहार क्यों।

मैं जैन धर्म की तरफ से बकील तो नहीं हूँ, परन्तु मैं वे वस्तुस्थिति निवेदन की है और समय की आवश्यकता बताती है। प्रत्येक दृष्टिबिन्दु से यही सिद्ध होता है कि जैन नास्तिक नहीं है।

नास्तिक वास्तव में वे हैं जो दुराचारी और पापी हैं, मांस मंदिरों का सेवन करते हैं, विषय विकारों में मस्त हैं, देश द्विन्द्वारी नहीं और अपने देश-वासियों से प्रेम नहीं करते, शास्त्रों के अनुसार अपने जीवन को पवित्र और श्रेष्ठ नहीं बनाते। अब प्रत्येक भाई आत्मनिरीक्षण करके देखे कि नास्तिक कौन है ?

यह वैदिक धर्मी भाइयों की सेवा में नम्रनिवेदन है। अब जैन भाइयों से भी प्रार्थना है कि वे अपने संकुचित क्षेत्र के दायरे से निरुद्ध कर अपनी मित्रता और सहयोग के क्षेत्र को विस्तृत करें। इन्हें भी यह न समझना चाहिए कि जो बारह श्रमों का समान तोर पर धारण करे वही जैन है। परन्तु मेरे विचार में जो व्यक्ति अपने जीवन में बारह श्रमों का पूर्ण रूपेण उभार लेता

१, यही वास्तव में सदा जैन है। जैन भाइयों को भी टेढ़े ईंट की इमारत अलग न बनानी चाहिये वे अपनी भट्ठा हट्ट रखें, अपने सिद्धान्तों पर कायम रहें, परन्तु अपने आप को हिन्दु जाति का ही एक अङ्ग समझ कर इसे शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न करें। जिस समय जैनियों की तरफ से सच्चे प्रेम की अभिव्यक्ति होगी और शस्त्रबिहिन सहयोग प्रकट होगा, तो समाज की कोई शक्ति इन्हें अपना प्रिय साथी समझने से वैदिक-धर्मियों को नहीं रोक सकती। दिलीभावना की सार दोनों तरफ से बजती है। जो तान का आवाज एक तरफ से निकलेगी, दूसरी तरफ इसका आवाज पड़ना और उत्तर मिलना आवश्यक है। यह प्रकृति का घटल निदान्त है। इसे कोई बदल नहीं सकता।

श्री रघुनाथ पन्त जी महाराज संगठन के बड़े समर्थक थे। वे अपने उपदेशों में संगठन पर बहुत जोर देते थे। कई स्थानों पर इन के उपदेशों से प्रभावित हो कर वैदिक धर्मियों और जैन भाइयों ने मिलकर हिन्दु-महासभा की स्थापना कायम की। इस तरह कई स्थानों पर आप की कार्यसभाओं और मनादनधर्म उभा ने भी अभिनन्दन पत्र पेश किए। आप भी साधारणतया गुरु-नाम का और बिदेस रूप में हिन्दु-जाति का प्रेम और संगठन चाहते थे।



दुनियां में अमन कैसे हो?

करे बात जिस से भी तू माफ़ कर,
औं रौनान भी हो उससे इन्माफ़ कर।
- न हो इस ताफ़ न हो उस तरफ़,
बधा मुक़दिर इन्माफ़ हो जिस ताफ़।
मददगन हो दिल में तो दिला साफ़ दे,
अमन ये मददगन यह इन्माफ़ दे।

आज बीमार में लेना कोई स्थान नहीं जहाँ कि
रानि का मायाप्य हो। बहुत से देशों को तो इस समय
मददगन ने नज़रबंद कर दिया है। बड़ा ही इन्माफ़, बाप
और निशान्मन सब मिट चुके हैं। लाशों मदिताली बिया
क हो गई हैं। लाशों बचों के मिनों में अपने मायापि
लगाया छट गई है। आनदान के आनदान के घर
हैं और छोटे राजा बड़े आने राज्य छंदबर दूसरे देशों को।
दिलों दुप हैं। यह नदरक दुसा उन देशों का जहाँ कि कुछ
मवा फल्लुदिल देन में कुछ को आन नही पहुँचो का
अमनप्य और के देना मोदूर है। बड़ा लाश बराप्य और
का बचा है, बड़ी बड़ बचा का बचा बचा है। नही है
कहा को बड़ का बड़ा है बड़ी नूरान बचा नही बचा
है। बचा बड़ा बड़ा बचा बचा है। बचा बचा बचा है।
बचा बड़ा बड़ा बचा बचा है। बचा बड़ा बचा है।
बचा बड़ा बड़ा बचा बचा है। बचा बड़ा बचा है।

इस में कोई सन्देह नहीं कि साईब ने बड़ी उन्नति की है। मार्ग वर्षों में पार होता था वह अब घण्टों में काटा जाता है जो कार्य महीनों में पूरा होता था वह अब कारखानों द्वारा घण्टों में पूरा किया जाता है। भोगोपभोग की सामग्री अधिक होती है। पहले जहाँ वर्ष में एक दो फसल उगाई जाती थी चार चार उगाई जा रही हैं। प्रत्येक प्रकार के फल, पुष्प और शाक प्रत्येक ऋतु में उत्पन्न किये जा रहे हैं। पहले चर्खा कर और खड़ी पर बैठ बैठ कर महीनों में कही जाकर काटा तय्यार होता था किन्तु आज हजारों लाखों कारखाने एक दिन में लाखों गज कपड़ा तय्यार कर रहे हैं। इतने पर भी दशा यह हो रही है कि दुष्काल पहले से अधिक पड़ रहे हैं। इसके कारण बहुत से लोग मर रहे हैं। पहले कोई बिरला ही कपड़ा न मिलने के कारण नङ्गे जिस्म फिरता था परन्तु आज केवल जोबित मनुष्यों को अपना तन ढांपने के लिये बख्शी मिलता अबितु मुद्दों तक को कपड़न नहीं मिल रहा। सारांश यह है कि खान पान और पहरान की वस्तुओं की कमी के कारण स्थान स्थान पर बेचैनी है। पहले कहा जाता था कि युद्ध की आवश्यकताओं के कारण यह कमी हुई है परन्तु अब युद्ध भी समाप्त हो चुका है और अशान्ति फिर भी बढ़ रही है। यहां पर मैं एक खास स्थान का उल्लेख कर देना चाहती हूँ। इसके समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ था कि अहमदाबाद में ६८ कपड़े का भिन्न हैं और वन में साठ हजार गांठ कपड़ा तय्यार होता है। परन्तु अहमदाबाद के निवासियों को पिछले दो सालों में एक गज भी कपड़ा नहीं मिला। क्या इस से मां कर कोई आश्चर्यकारी बात हो सकती है ?

वे अपनी विजय और सेनाओं से लिये भागें साफ़ कर लें,
 और सारे राज्यों को हम हम प्रचार पांस लें कि ये हम न मारें।

स्वयं प्राप्त है। अब इन दो शर्तों को सम्मुख रखते हुए
की समस्या पर विचार किया जाता है—

भारतवर्ष इस समय एक रूप से स्वाधीन देश
है। इसका कारण यह है कि इङ्गलिस्तान की आर्थिक दशा
कारण बहुत गिर चुकी है। वह एक दृष्टि से अर्थ के क्षेत्र
के हाथों बिक चुका है। वैसे भी इङ्गलिस्तान व्यापारिक
तथा अन्य साधनों में अमरीका का मुकाबिला नहीं कर सके।
इस लिये कुछ तो इस निर्पेक्षता के कारण और कुछ इस
शर्त नं० २ के कारण अब इङ्गलिस्तान यदि भारतवर्ष
स्वतन्त्रता न दे और अपने अधीन हो रसे तो उसे ये
शक्तियों को भी व्यापार आदि के अधिकार देने होंगे। इस
साथ ही शर्त नं० १ भी बड़ा महत्व रखती है। यदि मा
रूस और अमरीका से गठजोड़ कर ले तो इङ्गलिस्तान बहुत
आहत हो जाता है। यद्यपि भारत इतना बेसमय नहीं कि इस
सांकल अपने पाँव से निकाल कर दूसरी सांकल अपने पाँव में
हाल ले फिर भी इङ्गलिस्तान को तो भय अवश्य है। इस लिये
इङ्गलिस्तान के लिए एक ही मार्ग रह जाता है कि भारतवर्ष को
स्वतन्त्रता दे दे और इस देश में अपने व्यापारिक और सैनिक
अधिकार बनाए रखे। इस रूप में रूस और अमरीका इसका
नहीं दे सकते। इस में कोई संदेह नहीं कि इङ्गलिस्तान को
बर्तमान मजदूर हड़ताल पिछली अचिन्त की शानराना बने
जाने वाला में कहीं अधिक बढ़ा है। वह "स्वयं जीवो को
दूसरों को जीने दो" के सिद्धान्त को अधिक मानती है। इस
नियम कागजात का यह एक सामूहिक परिणाम है कि इङ्गलिस्तान
विमर हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, ईरान, हिन्दुस्तान को
बड़ा सब बड़ा क'हारी के नज्मे पेश कर रहा है। शान

लिये हो रही है कि कहीं रूस या अमरीका इन देशों को अधिक आसानियां देकर इन से समझौता करने में पड़ल करें।

हिन्दुस्तान को जो आजादी दी गई है, वह इन्हीं हालात वजह से है। इंग्लैंडिस्तान चाहता है कि देश को स्थिर कर ले बाली ऐसी आजादी देकर अपने पुराने व्यापारिक अधिकार बचाए रखे और भविष्य के लिए अपने सैनिक अड़े फायम करे।

ये सारे हालात एक तो पाठकों की जानकारी के लिये दिये गए हैं, दूसरा खास उद्देश्य यह है कि संसार में उस समय की शान्ति होनी असम्भव है जब तक कि स्वार्थता, छुट खसुट और दूसरों के अधिकारों को छीनने की लालसा दूर न हो। धर्म, शान्ति, शान्ति और परमात्मबल इस घेरेनी और अमन की दूर नहीं कर सकते। सच्ची शान्ति तो अहिंसा, सच्ची और सदाई से ही हो। सच्ची है जिसका उपदेश अटोई और वर्ष पूर्व भगवान् महावीर ने दिया था और जिस के सहारे मानव अहिंसा के अवतार महात्मा गांधी ने दिसालक दायितारों सामना करते हुए पचास वर्षों में ही सन्तुष्ट देश स्वतन्त्रता के द्वार पर ला खड़ा किया और अब इस देशनिवा-सियों का यह मतव्य है कि अमन इस स्वतन्त्रता का अनुचित उपयोग और अपने देश तथा नारे नमर का भलाई करे और हो, मतलब है न वा अहिंसा का समार में एक अवलम्ब और उद्देश्य बन कर रहने है 'क' स्वतन्त्र विना दुष्ट के भांजन होना ही संभव है। समार के अनुप्य अहिंसा और शान्ति के देश बनना 'अमन' का अर्थ है, बढ़ाई, बढ़ाई ही संसार

शान्ति का साम्राज्य फैलता चला जायगा। परन्तु लालसा और निर्दयतापूर्ण व्यवहार समाप्त न होये, दुनियां में अमन कायम नहीं हो सकता। लड़ाई मगरे का कारण स्वार्थान्धता है। यह जब तक दूर न हो, अन्धकार न हो, विचारों में शुद्धता न हो, दूसरों को विनाश दुःख देने और सताने का अपवित्र विचार दूर न किया, तब तक अमन स्थापित नहीं हो सकता। यही भगवान् ईश का उपदेश है जिसे आज जैन मुनि घर घर सुनाते छिने। यही वह उपदेश है जिस को सुनाते सुनाते श्री सहान चन्द महाराज ने अपना जीवन समाज के लिये अर्पण कर दिया।

स्वार्थान्धता के रोग को दूर करने का उपाय धर्म तथा राजनैतिक शक्ति को प्राप्त करना नहीं, अपितु इन के प्रयत्न करना तो चट्टा लोभ और लालसा की भाग को दूर रखना है तथा इस से और अधिक मात्रा में बेदेही हो बर्चस्वमयी फैलती है। इस का उपाय है आत्मा की ऊँचा छत्र दिल को नेकी और भलाई की ओर लगाना। शीरा हो अन्याय और निर्दयतापूर्ण व्यवहार से मनुष्यसमाज समझाए न गे। आज तक कभी मुझकी है और न आगे सुप्रसंगे। इन को मुझझने के लिये मनुष्य में मनुष्य होने की आवश्यकता है। मनुष्यता का पहला लक्षण यही है। दूसरों के साथ बड़ा बर्ताव करा जो तुम चाहते हो कि वे तुम साथ करें। भगवान् महावीर ने यही कहा था कि सब से बड़ा है। सभी जाना चाहते हैं। मरना कोई भी नहीं चाहता।

१ मन्व प्रोकार्थ इच्छन्ति, बोधित न मारज्जत। दरावेस्ये मूव कथ्याय ६ गया ११



मन धन भा : आन मन में जो गुरुमुख बन रहा है
 को बरसावा हो रहा है , वगैरह तो मन धन नहीं ? है
 हुआ है : परन्तु एक बात को जानो है : वही जानो जानो
 कहा रहा है : हुमा जमा ने कोरन गानवक को अगारव
 मना समान ही भी : हुमा जमा ने हजमन मरुमर को
 मयम मयम को भी : वरु जमा है अगार
 मन मन भावना होकर न हो मन मन मन देना और एक
 के जो न हो हजमन को नही गुरुम मयम : भावना के कि
 मनमाने मयम हो वरुम हो वरु हुमा गुरुम को
 मयम मयम है मयम मयम कोरन मयम : मन हुमा
 वरुम मयम को मयम देना मयम मन को मन को
 मन को मयम को मन गुरुम को कि गुरुम मन मन वरुम , वरु
 कोरन मयम को मयम को मयम को है मयम -

मन है जो मन वरुम को वरुम को ,

मन मन वरुम वरुम को मयम को

मयम है मयम वरुम मयम को

मयम को मयम है जो मयम को

मयम को मयम को मयम को

मयम को मयम को मयम को

मयम को मयम को मयम को

मयम को मयम को मयम को

मयम को मयम को मयम को

मयम को मयम को मयम को

संक्षिप्त जीवन

अफसोस जहाँ से दोस्त क्या क्या न गये ।

इस बाग से क्या क्या गुले रौना न गये ॥

या कौनसा नज़ल दिस ने देखी न छियां ।

बोह कौनसे गुल खिले जो मुरझा न गये ॥

आह मौत ! तेरा हाथ कितना लम्बा है । तेरा पंजा कितना
शाली है, तेरी पकड़ कितनी मजबूत है । तेरा आना
उत्त है । तेरी शक्ति कितनी अधिक है । तू बड़ी कठोर और
ग है । तू बड़ी जालिम है । तू जरा विचार नहीं करती । तू
संकोच नहीं करती । बिना भेदभाव के छोटे बड़े, स्त्री
बच्चे और बूढ़े सभी पर हाथ डाल देती है । इसी लिये
है—

नसकी हो गड़ा हो या शाहे जो आह,

बोमारो व मौत से कहाँ किस को बचाओ ।

आ ही जाता है जिनगी में इस वक्त,

कड़ना पड़ता है कि भाई कद आओ ।

मंसार में भिन्न भिन्न कहने पर जाने वाले यात्रा
। कह देना चलना है कोई दाँद पर स्वार होकर काइ रत
कठन है न कह नउत में यत्न नउत कुल न कुल
मंसार के नउत नउत नउत नउत नउत नउत नउत नउत
कहना पड़ता है यत्न नउत नउत नउत नउत नउत नउत
इसमें जो रत नउत नउत नउत नउत नउत नउत नउत
बसना नउत नउत नउत नउत नउत नउत नउत नउत

न देखा उमर सा कोई मुसाफिर,
कही मजल नही जिस के सफर में।

यह मुसाफिर गन्तव्य स्थान पर पहुँच कर ही पता
है। हम की अन्तिम संज्ञित नहीं दीत है जो यह भी नहीं पता
कि जिस व्यक्ति पर हाथ साफ करने लगे हैं, जिस को
काटने लगे हैं, उस का कितना आदर और सत्कार है। इन
लोगों को उस की कितनी आवश्यकता है। वह व्यक्ति संसार
लिये कितना उपयोगी है। साधारणतया ऐसा जाता है कि
लोग, जो मनुष्यत्व से राहत दे, जिन के कारण संसार
है। जिन की समाप्ति के लिये अत्याचार पीड़ित जन हाव
कर प्रार्थना करते हैं। इन लोगों की उमर की रसी
होनी चली जाती है। परन्तु उन व्यक्तियों की उमर की रसी
निर्देयी मौत नहीं

जिन के जीवन का प

होता है। जिन्हें

है, जिन का प्रत्येक

की उपस्थिति लोगों का बहुत दूर करने वाला होता है।
की दाये आयु के लिये लोग दिन रात प्रार्थना करते हैं।
फिर भी मृत्यु उनकी आयु को समाप्त कर ही देता है। यह
एक निश्चित नियम के अनुसार होता है। हम अपने
जिये वा स्वाध्याय के विचार से कर्मों द्वारा ही दाये
कामना करते हैं। परन्तु मनुष्य इस विषय में अज्ञान है।
की जितनी आयु कभी भी न हो, उमर वह अचर्य भाग
परन्तु आयु समाप्त होने पर उस बढ़ाना सम्भव नहीं
मनवाने का या मरने, मरना ही या रक, या पानी ही या पु
क पु के लिये न होने पर उस का अन्त्योत्तर अतिबाध है। यह

यह वह जगह है कि आकाश पर आकाश प्रती
यह वह जगह है कि दूसरे पर दूसरे प्रती

अतः प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि अपने को इस संसार की असंसारता का सदैव ग्यान रखे। समझे कि यह वह स्थान है, यह वह जन्म है जिसे प्रत्येक मनुष्य जन्म मरण के चक्र से मुक्त हो सकता है। कहा है—

मुझे कता अगरसे बहुत वे सवात है,
वे पाओ वे मदार हर एक इस की बात है।
लेकिन बड़ा कहा जो किसी ने कहा है यह,
दिम्मत के मारको के लिये खुब जा है यह।

मनुष्य-जन्म यह दरवाजा है जिस से जन्म किले से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। मनुष्य को अपना प्रभार धरतीत करना चाहिये कि इस के दरवाजे के निकट पहुँचने का प्रयत्न करे ताकि अक्सर लगा कर बाहर निकल जावे। मनुष्य संसार में इस प्रकार कि स्वयं अपना कल्याण कर जावे और दूसरे पर-अपने पर चलाता अपने लिए गौरव समझे। ऐसे के जीवन लोगों का अन्धकार में दीपक का काम है एक कवि ने कहा है—

इन्हीं पर है कुछ फकर है अगर किसी की,
इन्हीं में है गर है शफ आदमों को।
इन्हीं में है आबाद हर मुल्को दीलत,
इन्हीं से है सरमज्ज हर कौमो मिलित।

फिरता है सीले द्वारम से बही मरनों का मुँह,
रोर सीमा तैरता है बत्ती रफतन भाव में।

अब उन्हें भय दिखाया बाठा या मार-पीट की दृष्टि
तो आप मुस्कराते और 'एक कवि के कथन के अनुसार'ों
ध्यान न देते।

हराते क्या हो कह कह के ये खंजर हैं ये भाले हैं।
ये खंजर और भाले सब हमारे देखे माने हैं ॥

इन सब शिक्षाओं और कष्टों को सह कर महाराज श्री ने
साफ साफ कह दिया कि मैं इस जाल में फँसना नहीं चाहता।
फिर उन्होंने ने प्रेम से घर वालों की समझाया और वन की प्रत्येक
मुक्ति का उच्चार दिया। उन्हें साधु जीवन की ओछता समझाई।
अब घर वालों ने देखा कि हमारे सभी प्रयत्न असफल हुए हैं
हमारी शिक्षाओं और प्रयत्नों का कोई फल नहीं हुआ, तो उन्होंने
ने दिल में समझ लिया कि अब अधिक ठठ करना व्यर्थ है
साथ ही इस कुटुम्ब के लोग सज्जन पुरुष थे। इन के अपने
विचार भी नेक थे। वे दिल में साधु जीवन की ओछता को सुख
समझते थे। परन्तु अपने मोह के कारण बाधाएं डाल रहे थे।
फिर उन्होंने विशेष प्रयत्न करना बन्द कर दिया। प्रसन्नता से
उन्हें अपनी दार्ष्टिक इच्छा पूरी करने की आज्ञा दे दी।

आप श्री ने घर वालों की इच्छा के अनुसार विवाह न
किया परन्तु दूसरे प्रकार का विवाह किया जिस से उनके मन की
कत्ती मिला गई। उस विवाह से तो दो घरों की प्रसन्नता होती,
परन्तु इस विवाह से हजारों घरों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।
आज ने कलंगुन सुदी रात्रि के दिन सम्बन् १६६० में गुजरातवासी

कि स्वर्ग सिधारने से एक रोज पहुँचे भी आप ने उपदेश दिया कि आपको साँस लेने में बहुत रुकें आप के हृदय में जाति-प्रेम कूट कूट कर भरा हुआ था। ने अपना जीवन जाति-सुधार के लिए कई बार आप भी की शारीरिक कष्ट होता था, उपदेश देना कभी श्रद्धा न करते थे।

जैन समाज का सुधार और उसे उन्नति के पथ लाकर आप भी ने जो उपकार किया है, उसे जैन कभी नहीं भूल सकना। आशा है कि वे लोग आप के हुए मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने को उन्नत करेंगे। साथ ही जाति और देश की उन्नति में सहायक होंगे।

आप भी के उपदेश केवल जैन समाज के लिए परन्तु सारी मानव जाति के लिए थे। बहुत से अजैन लोग आप भी के उपदेश सुनकर उनसे लाभ उठाते थे।

महाराज भी का यह स्वामाविक नियम रहा है कि किसी प्रकार का आदम्बर न चाहते थे। मोन रहकर ठीक करना आपको बहुत पसन्द था। यही कारण है कि अनुभव आदर्शमय और मार्मिक उपदेशों से प्रभावित है जैन जाति निद्रा में जागृत हुई। आपके उपासकों के विषय में है—

१- ज्ञान में मगडुन पैदा हो।

२- ज्ञान के वातका में प्रवेश न रहे।

३- ज्ञान में वम प्रवेश हो।

४- ज्ञान में न केवल प्रवेश न्यून हो।

१- जाति अपने आत्म-वल्याण के लिये प्रयत्नशील बने ।

महाराज श्री उपरोक्त विषयों पर ऐसे सुन्दर ढंग से भाषा डालने थे कि लोग मन्त्रमुग्ध हो रहते थे । आप जो भी कहते थे, वह आप की दार्ढिक भावना की व्यक्त करती थी, और जनता के दिलों पर उसका प्रभाव पड़ता था । कई बार मैं हुआ कि उपदेश के पश्चात् ही फौरन ही संघ के लोग अपनी सभा करते । अपने को संगठित करने और अपनी मानता को दूर करने के उपाय सोचते और जो फैसले होते, वे कार्यरूप में लाया जाता था ।

महाराज श्री जो बड़े नगरों में ही चतुर्नास नहीं करते थे, पितृ दूरस्थ छोटे छोटे ग्रामों में भी भगवान् वीर का सन्देश फैलाते थे । जिसका फल यह हुआ कि कई छोटे छोटे स्थानों पर भी लोगों ने आप श्री के बचनों से प्रभावित होकर अपनी जाति के उपाय सोचे और उन्हें कार्यरूप में लाया गया उनके विवरण अन्यत्र दिया गया है ।

आप श्री को जैन शास्त्रों पर पूर्ण अधिकार था । यदि आपका जीवन बका करता, तो आपको मुनि मंडल अपने कर्माधिकारों से विभूषित करता । परन्तु आप श्री को तो स्वप्न में भी ऐसा विचार न था । चुपचाप अपने कर्तव्य का पालन करना आप के जीवन का एक ध्येय था ।

६२ साल की उमर पर्यन्त पूरे ४२ वर्ष तक आपने जैन जाति की अनन्यक सेवा की और इसका सचा सुधार किया । जेठ वदा ४ सं० २००२ का पसहर में सास की तफ्तीक से

आप स्वयं सहाय गये। उन्हें तो अपना बोझ छोड़ने का
 भर भी आकाश न था, परन्तु आप भी के विवेक से ही
 आ सुति पहुँचो दे, इसकी पूर्ति निकट भविष्य में नही हो
 सति कृतिप ददं दस्यने याने और मोन रह कर दे
 करने वाले चादरी सहायता बहुत ही कम है। इसकी
 नाम सदैव समझ रहेगा। परन्तु ज्ञानि इन के नाम के
 बाद लगा सको दे। नही नही इन के नाम को भी
 इन के उद्धार का बालू इन परार उद्धार सको दे कि इन
 के निःश्वसन उद्धारों का पूर्ति के त्रिप निःश्वसन प्रयत्न हो रहे।

जैन ज्ञानि का महागुरु जो के विवेक का जो हो
 दुःख दुःख, और सजाज सुधार का जो चक्र लागू रहे
 कम न था। परन्तु दुःखों में इसी दिनों में ज्ञानि का एक
 महागुरु निर गता। जेरा मान्यवे पुनराद् आचार्य भी बन
 का महागुरु न थे, जो आकाश से इसी दिनों में गये
 गये। इन दोनों महागुरुओं के स्वर्गगत से केवल एक
 का ही आचार्य था। ज्ञानि का महागुरु पनि हुई। ज्ञानि
 महागुरु का विवेक ही कम न था, परन्तु एक
 महागुरु के विवेक से ज्ञानि का विवेक का वातावरण
 और कम की एक कर न हो रहा है।—

पञ्चमः श्री गुरुः श्री जैन चरित का ललितः
 ललितः श्री गुरुः श्री जैन का चरितः
 श्री गुरुः श्री जैन चरित का ललितः
 श्री गुरुः श्री जैन चरित का ललितः

जन्म कुण्डली

मजहब कभी माइंस को सबदा न करेगा,

इन्सान पढ़े भी, तो फरिस्ते न बनेगे ।

प्रायः अच्छे हिन्दू घरों में बच्चे के उत्पन्न होने पर उसको जन्म कुण्डली तय्यार कराई जाती है । क्योंकि मनुष्य का इभाव है कि वह अपने भविष्य को मालूम करने की तीव्र इच्छा रखता है । लोगों की इस इच्छा से ज्योतिषी, रम्नाल ह्स्तेस्त्रा के विशेषज्ञ सब लाभ उठाते हैं । वे प्रति दिन अपने ईर्षा के लिए पर्याप्त रुपये कमा लेते हैं ।

इन उपरोक्त केवल रुपया कमाने वाले ज्योतिषियों के कारण इत से लोगों को ज्योतिष में विश्वास नहीं रहा । परन्तु फिर भी लोग देवे अवश्य बनवाते हैं और ह्स्तेस्त्रा की पुस्तकें पढ़ते हैं । क्योंकि ऐसे व्यक्तियों की संख्या अधिक है जो किसी किसी प्रकार से अपने भविष्य को जानने का प्रयत्न करते हैं ।

यह तो सभी जानते हैं कि राजा लोग भी अपने दरबार में ह्स्तेस्त्रा ज्योतिषी रखते हैं । गणितज्योतिष की बातें प्रायः क निकलती हैं जैसे कि ज्योतिषी वर्षों पहले ही बतला देते हैं कि मुक दिन के अमुक समय पर चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण होगा । इन से प्रभावित होकर भी लोग फलितज्योतिष की तरफ आकृषित होते हैं ।

वैज्ञानिक इन बातों का मिथ्या प्रमाणित करने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु मजहब विज्ञान के सामने नतमस्तक होने का तयार नहीं । धार्मिक विश्वास और संस्कार निरन्तर चले आ रहे हैं । विज्ञान केवल प्राकृतिक वस्तुओं को ही खोज करता है,

पान्थु धर्म आग्निहोत्र रात्रि का रहस्य समझता है।
 के चमत्कार वैज्ञानिकों या साधारण बुद्धि वाले
 में नहीं आ सकते। इनका रहस्य वही समझ सकते।
 क्षेत्र के खिलाड़ी हैं।

जन्म पत्रे बनवाने वाले लोगों में कई तो
 कि कोई भी बात सची नहीं निकलती और कई
 कि सब बातें बिल्कुल ठीक निकलती हैं। कुछ
 विधान है कि कई बातें ठीक निकलती हैं और कई
 सब व्योतिपियों के गणित पर आभित है।

यदि एक दूसरी दृष्टि से देखा जाए तो अभी
 पहले ही जान लेने से कोई लाभ नहीं। भाग्य
 को तो प्रत्येक व्यक्ति मानता हो है। यदि हमें कोई वस्तु
 बाली है, तो अवरय मिलकर रहेगी। दूसरे यदि
 है, तो किसी शुभ फल की आशा नहीं की जा सकती।
 हमें बड़ी बात बता सकती है जो हमारे भाग्य में है।
 भाग्य में लिखा है, बड़ी मिलेगा, तो पहले जान लेने
 लाभ नहीं। यदि कोई सुखी जाने बाली है,
 ज्ञान लेने से वह ज्ञानम् नहीं जो इस के अकस्मात्
 प्राप्त होता है। यदि कोई कष्ट जाने बाली है, तो पहले ही
 ज्ञान हो जाने से हम चिन्ताग्रस्त हो जाते हैं।
 चाहिये कि वह अपनी भद्रा और पैर्य को बढ़ाए और
 बने। प्रमादा मनुष्य तो स्वयं ही बदकिस्मत होता है।
 जन्मपत्री बनवाए ही उसे अपना दुभाग्य समझ लेता
 परिश्रमी और पुरुषार्थी मनुष्य को भी देवा दया
 आवश्यकता नहीं। उसे अपने पुरुषार्थ पर विश्वास होना
 शरार के भाग तो भागने ही पड़ेंगे, परन्तु जो व्यक्ति

सप्तपत्रम्—यथा सप्तचन्द्रिकायां श्लोके-रुन्वालयममवो बालो इत्यादि—

सप्तचन्द्रिका के प्रथम परिच्छेद में कहा है कि १६ वर्ष का मान में जन्म होता है, वह अपने सौ प्रकार के चर्मण्यों का माना, सौभाग्यशाली, सगुण और प्रभावशाली होता है।

शारीरसप्तम्—यथा सप्तचन्द्रिकायां श्लोकानि श्लोके-गम्भीरचेष्टिनः शूरः इत्यादि—जिस की जन्मदिनी वह सभी कर्मों की विचार पूर्वक करने का, प्रसन्न प्रसिद्ध कला, समाचर, योग्यकारी, महाज्ञानी और अनेक कृत्य का प्रधानकृत्य होता है। सभी लोग उसे करते हैं।

यशोन्मत्तं कृत्यो मे सूर्य पांचवें घर में और चतुस्र्गं मे ११ वें स्थान में है जिसका पत्र यह है कि राश १५ महीने सेवा करते हैं। वह पुरुष सच्चा शास्त्री का होता, व सोमच में प्रसिद्ध और कृत्य का सुविधा होता है।

चन्द्रमा मे पांचवें स्थान में योग्य का होता प्रकाश है कि वह व्यक्ति को और मान में सत्कार व रक्षक होता है। यशोन्मत्त पुरुषाचर में न कम का सम्बन्ध होता है।

चन्द्रमा मे योग्य का पत्र है। वह शक्तिशाली और शक्ति का योग्य का योग्य बनता है।

चन्द्रमा मे योग्य का पत्र है। वह शक्तिशाली और शक्ति का योग्य का योग्य बनता है।

चन्द्रमा मे योग्य का पत्र है। वह शक्तिशाली और शक्ति का योग्य का योग्य बनता है।



करके रोहतास, जेहलन और स्वालकोट होते
 पहुँचे। श्री छज्जानचन्द की वैराग्यभावना बहुत
 जब उन्हें आचार्य श्री के परस्पर आ जाने की सुष
 तो वे शुष चाप घर से प्रधान कर के इन की चे
 पहुँचे। आप अपने माता पिता के सब से छोटे पुत्र थे।
 माता पिता आप को बहुत प्रेम करते थे। और
 उन्हें सलानेशाद कहा करते थे। जब छज्जाने
 गायब हो गए तो माता पिता को बड़ी चिन्ता हुई।
 खोज होनी प्रारम्भ हुई। स्थान स्थान पर आपनी
 कहावत प्रसिद्ध है कि शरक और मुरक छिपे नहीं पाते
 इनकी वैराग्य भावना से परिचित थे। उन्होंने अनुमान
 कि ये साधुओं की सेवा में गए होंगे जो वहाँ बीना
 गए हैं। उन्हें मालूम हुआ कि ये साधु परस्पर देखे
 घर वाले नहीं पहुँचे। आपके साधुओं ने वहाँ आप को
 पीटना प्रारम्भ कर दिया, परस्पर के लोगों से यह देखा
 रोकने के श्रम आगे बढ़े। तब आपके माई परने
 स्वभाव से बहुत तेज थे और देखने में पछान प्रवे
 ने सत्रचार कर कहा कि आपो इस की कौन बचा
 सब पीछे हट गये। श्री छज्जानचन्द श्री को इनके
 पीट कर घर वापिस ले गए। इसके पश्चात् गजानन
 गजाननराव जो महाराज और आचार्य श्री आनाराज
 गज विहार करने हुए स्वालकोट आ पहुँचे। जब छ
 का पता लगा कि उनके गुह स्वालकोट पहुँच गए
 दूरी कर का से भाग कर महाराज श्री के घरलों से
 बने आ पहुँचे। घर वाले भी पाछा कर के नहीं पहुँच

जो के शब्द सुनकर आश्चर्यान्वित हो गए और इन्हीं
अभी तक मेरे पास इस प्रकार का कोई मुकदमा
ऐसे मुकदमे तो बीसियों आते हैं कि मनुष्य धन का
बनता है और दूसरे लोग टाल मटोल करते हैं।
पड़ला ही मुकदमा है कि इस मनुष्य को धन पैरा
और यह ठुकराता है।

पर वालों ने दूसरी आपत्ति यह की कि नाम
नावाजिरा है, इस लिए इसकी राय को महत्व न
इस विषय पर काफी वाद-विवाद हुआ। कागजात
मजिस्ट्रेट ने फैसला दिया कि लड़का वालिरा है। यह
आदे, आ सकता है। उपरोक्त फैसला होने पर भी
श्री स्वज्ञान चन्द जी को शहर से बाहर न जाने दिया
उन्हें वेद भी नहीं किया। इसी बीच में आगामी चौम
आगए और गणपतछेदक भी गणपतराय जी महाराज ने
१९४० का चौमामा स्थलकोट शहर में करना स्वीकार कर
रायभविंदी में श्री लालचन्द जी महाराज का चातुर्वेद
चौमामा प्रारम्भ होते दो श्री स्वज्ञानचन्द जी ने चोरीन
अपना डेरा स्थानक में लगा दिया। रात दिन वही रहे
आना आने भी घर न जाते थे दोहा से पूष हा ऊँची ने
जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ कर दिया।

लाला मोहनशाह का घराना प्रांतस्थ और प्रसिद्ध
इनके नाम पर न गया कोई व्यापक न हुआ था कि जिस
में इनका धन हान हुआ था कला बनने का निश्चय कि
इस लाला चोवाल्लो की श्री स्वज्ञानचन्द जी का इस प्रकार।
बहुत दूर जागा। कहानि इस अपन कुल का।

लेकर अपमान सहन करने को भी तय्यार हो जाता है। उसे अपनी प्रतिष्ठा और आदर का भी ध्यान नहीं रहता। धर्म की ओर मनने क्या परवा करनी है। धन की तुलना में वह किसी बड़े से बड़े गुरु या महात्मा की अवगणना भी कर देता है। उसके हृदय में धन का आदर दूसरी प्रत्येक वस्तु से अधिक होता है। धन ही उस के लिये आदरणीय और पूजनीय वस्तु होती है।

उपर्युक्त बातों का ध्यान रखते हुए जब हम एक जैन साधु के जीवन पर दृष्टिपात करते हैं, तो देखते हैं कि पूर्ण युवा अवस्था में जब सांसारिक आनन्द भोगने और हादिक इच्छाओं को पूरा करने का अवसर होता है तो वह घर के सब सुखों का त्याग करके अपने मित्र का एक एक बाल बख्शवाता है। सात में दो बार इस कठिनाई को सहन करता है। आज की जगत हुई बालिका से लेकर सौ वर्ष की वृद्धा स्त्री तक को माता के रूप में देखने लगता है। धन को पास न रखने का ब्रत धारण करता है। सदैव पैदल चलने, जूता न पहनने, छाया न लगाने, किसी स्थान पर बिना आज्ञा पत्र न रखने और स्त्रियों के समीप से दूर रहने का नियम धारण करता है। किसी पर हाथ न डालने और बिना आज्ञा किसी वस्तु को हाथ न लगाने की कठिन प्रवृत्ति करता है। ज्यों ज्यों युवा अवस्था का विकास होता है, इसही सांसारिक इच्छाएं मन्द होने लगती हैं। क्या ये सब मौजिदा नहीं हैं? क्या यह मौजिदा नहीं कि एक स्वस्थ और सुन्दर नवयुवक के सामने अनेक सुन्दर युवतियां शृङ्गार कर के आती हैं और उससे सदुपदेश सुनना चाहती हैं। वह साधु सबकुछ उनही उपदेश देता है, परन्तु अपनी दृष्टि को

करा भी अपवित्र नहीं होने देता। उसने अपने हाथी को रद्द जंजीरों से चकड़ लिया है। इस की प्रशंसा कि उस से मस हो जावे। केवल पुस्तकें पढ़ने, ज्ञान प्राप्त करने, आसन लगाने या तीर्थ स्नान करने से नहीं बन सकता। साधु बही है जिसने अपने मन पर पूर्ण प्रभुत्व कर ली है।

एक हिन्दी कवि ने कहा है—

जो मन मारे क्या पढ़े पुराण,
जो मन मारे क्या क्या ज्ञान।
जो मन मारे क्या धरे ध्यान,
जो मन मारे क्या वेद कुराण॥
जो मन मारे क्या मदी मसान,
जो मन मारे क्या पुण्य भरु दान।
जो मन मारे क्या युद्ध संग्राम,
जो मन मारे क्या गङ्गा स्नान॥
मन मारे तो सिद्धि होई
मार साधु बिरला मन कोई

मुझे स्मरण है कि एक जैन व्यास ने एक वैराग्य कथा कर रहे थे। पर्युषणों के दिन थे। कथा समाप्त होते परते मुनि जी ने कहा कि मैं आप से एक व्रत करवाना चाहूँ। सम्भवतः मैं अब केवल सात दिन बाकी हूँ तुम इन दिनों में ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने की प्रतिज्ञा करो। यह कह कर उन्होंने यह कहा कि जो व्रत धारण करने की तैयारी करेगा उसे हाथ बँटाये। लगभग ७० या ८० व्यक्ति अपनी-अपनी बेलन पांच साल के हाथ बँटाये। जिस व्रत की स्थापना

कपरोक्त गुण सच्चे साधुओं के ही
 व्यक्तिगत सुख और चाराम की कोई परा
 कपना सर्वत्र अपने भाइयों की सेवा में अर्पण
 तो नाम ही के साधु होते हैं । वे केवल
 भिन्न या सामाजिक काम काज के परिचय
 त्यागी बनते हैं । इनका भेष साधु का होता
 वही सामाजिक इच्छार्थ छिपी रहती है ।
 आकर्षण हृदय में बने रहते हैं । केवल
 अगाने, अगर्षे कपड़े पहनने आदि से कोई ।
 इस बात को पत्राची के एक कवि ने ब
 दिया है—

मन्ता नाम रे धनु का जपन मोलन, सोसा मोन
 बाग मोलना याद कर सैन बाहने, पद के दि
 लक्ष्मी नाम काम पद करन कोकी,

बाटा निच कोई आँखा महर बाता, जेइका

राम राम कह बाइगुन बाइगुन कह, बाँलाका

कोई मन्ता पापत्री पाठ पूजा, निच अपनी कमर
 करे निच दरवा बजाव काँडे, इरोन करवा का कोई रापर की
 मने अथकका हो गया कजे पूरा, मिती कजे काका माइया की
 निच मेम का सुखसुख होन मारे, नोक काह के मिती निच की
 सीउठ अक निच ईलाका काज मत्र करीन होवरा मने निच की
 केइका होवरा क्यूँ उ बक कका, पैठ कुइ रा दिना कज का
 कज का कजका कजका काज मेइ, कज कावरा कजका कजका
 कजका कजका का कज का कजका काका काका कजका कजका
 कजका कजका का कजका का कजका काका काका कजका कजका

चिरनचित्तनुं वस कर लइये, कर्म काण्ड न कुम्भ संवार दा इ
जेहा न सुरमा होर कोई, जेहदा चित्त नूं पकड़ खिलयार दा इ
चित्त दी तुमी परताल भाई, चित्त डुबड़ा चित्त हो तारदा इ
चित्त दी खेह है प्यारया ओए, चित्त जित्तदा चित्त ही हारदा इ

बाह्य चिह्न और आहम्बर साधु नहीं बनाते। सच्चा साधु
ने अपने मन को दौड़ को कायू में करता है। जहां साधारण
सांसारिक आनन्द लुटते हैं, वड़े बड़े शानदार महलों में
हैं। स्वादिष्ट से स्वादिष्ट भोजन करते हैं। बढ़िया से बढ़िया
गरी के सामान प्राप्त करते हैं। गद्देदार बिस्तरे और कमानी
: प्लंग बिठा कर सोते हैं। वहां सच्चा साधु इन सुखों को
छ समझ कर त्याग देता है। इन को अपने कल्याण के
में बाधाएं समझता है, अपने मन को ऐसी मजबूत नकेल
न लेता है कि वह इन क्षणिक सुखों की तरफ आकर्षित नहीं
जा। मन को चश में किए बिना साधु एक कदम भी नहीं
न सकता। यदि मन की बागहोर ढीली है तो साधु अपने
जिज का पालन नहीं कर सकता। इसी लिए एक और पंजाबी
बिने कहा है—

हाड़ा शांत हो जाऊंगा चित्त तेरा,
मोह नाया दे जाल नूं तोड़ के बेख।
जित लवंगा मारयां वैरियां नूं,
इस मन अमोदे नूं मोड़ के बेख।
मिट जाएगी भटकना कुल तेरा,
चित्त विषय विकारा नो होदरे बेख।
अमृत आवेगा बड़ा सवाद तेनू,
चित्त नाल प्रनु द जाड़ के बेख

शरित् कबल नमाझे रयाईं पै नाख है,
सबदे के दाग मे है क्याही गुणाह की ।

बास्तबिक सफलता हृदय की पवित्रता और दिल को
मे करन मे प्राप्त होती है । हाथी मूँठ मुँह बहा लेने मे सत्य
शक्ति नहीं होती ।

हाथी मूँठ मुँहवाप के हुआ है घोटम घोट ।

अरे मन को क्यों नहीं मूँहया जिसमे सारा खोट ॥

एक उर्दू का कवि इसी बात को निल शब्दों से व्यक्त
करता है—

इस कलन्दर की पसन्द आई मुझे कितनी यह बात ।

चार कम् के मरु मे दिल मरु होता नहीं ॥

इसी प्रकार हाथी मूँठ बढ़ाने या माछा हाथ में लेने के
पय मे एक और कवि ने सचाई को बड़ी खूबी से अपने शब्दों
बर्तन किया है । वह कहता है—

क्या फायदा अगर रेश बढ़ाई तुने ।

पेशानी पै महाराब बनाई तुने ॥

तमशीह व मुमरला से क्या हासिल ।

अब कुछ भी न की दिवकी सफाई तुने ॥

इसी प्रकार गीत रूप बस्त्र पहन कर भी बास्तबिक सफलता
ही निकल सकती—

इम्मान को देव है कि यह रंग दिल मे ही ।

जाहिर मे सब मज्द हो पोशाह का वाग्न ।

हम यह सिद्ध न कर पाए है कि मन का कार्य मे सत्य
इरादों का हमन करने मे और इन्दिश पर विजय प्राप्त
मे यह सब संभव बनना सम्भव है । इस बात से इन्कार

नहीं किया जा सकता कि जैन साधु प्रायः डमरूक युक्त होते हैं। श्री स्वज्ञानचन्द्र जी के जीवन-चरित्र का पढ़ने से ज्ञात होता है कि वे एक सच्चे साधु, वै गृहस्थ के सुखों को भोगने और शाही कराने से इनकार कर वालों ने नकद पचीस हजार रुपये पेश किए अतिरिक्त पांच रुपये रोज का जेब खर्च देना परन्तु इस चीज युयुक्त ने स्पष्ट कह दिया—

सोड़बते चढ़ते दौलत से हमें ग्राह्य नहीं।
हाथ फैलाएँ कहीं जाके, यह आरत ही नहीं।

क्या यह मौजजा नहीं कि लोग
कि उन्हें रुपया दिलाया जावे, परन्तु आप भी
करते हैं कि इन्हें रुपया दिलवाने के जाल से मुक्त किया
जीवनानन्द के एक माँड़ी पर पड़े हुए तीन
तफें भी भागते हैं, परन्तु आप भी को मन
का साथी चुनने के लिये प्रायश्चित्त की जाती है। आप
हैं कि मैं केवल एक ही की सेवा नहीं करना चाहता,
मैं सारे संसार का सेवक बनना चाहता हूँ। आप
आप वैश्व के लिए एक दूसरे की जान के लागू बन
चाही या कालाज के चन्द दुकानों की खातिर एक
जैसे पृथ्वी व्यक्ति को मौत के घाट उतार देता है। परन्तु
स्वज्ञानचन्द्र जी को पकड़ पकड़ कर लाते हैं और
तुम सम्पत्ति तो पर से छोड़ छोड़ कर भागते हैं और
कि मैं इस बन्धन में कैसता नहीं चाहता। क्या वे ही
मौजजा नहीं हैं? इस मौजजा रूप जीवन को व्यतीत कर
जैन साधुओं की वृत्ति का और वर्णन आगे बढ़िये।



रेत की सी दीवार है दुनियां ।
 भोछे का सा प्यार है दुनियां ॥
 बिजली जैसी चमक है
 पल दो पल की मलक है
 पानी का सा है यह पथारा ।
 जुगनु का सा है चमकारा ॥
 आज अहां जंगल में बंध
 कज सुनसान पड़ा है अंध
 आज अहां है मेला दूना ।
 कल वह गांव पड़ा है सुना ॥
 आज है रहने की तपस्या
 कल है चलने की फिर बंधा
 आज है पाना कल है सोना ।
 आज है हंसना कल है रोना ॥
 द्वार कभी और जीत कभी ।
 इस नगरी की रीत बरी है
 साथ सोदाग और सोग है यां का ।
 नाव का सा संयोग है यां का ॥
 रंज में अमृत मिठा हुआ ।
 अमृत में विष घुला हुआ है
 गिरे बही है बदे है जो यां ।
 पटे बही है बदे है जो या ॥
 सुरा न हो तु दे मतबो
 नरो में रहो न ऐ बाने
 राम की पटा है आती गरजती ।
 पदों में या चक्याल है बजती ॥

यह भजन सुन कर लोग बहुत प्रसन्न हुए और बहुत
मे आवाजें आने लगीं कि एक भजन और सुनाया जाय ।
तब ने यह कर कहा कि संसार की अज्ञानता और भीत
नवदता की ही आने न सुनाई जाये अपितु संसार में अपने बहने
। और हमें परायण होने का भी कोई उपदेश सुनाया
।

तब स्वामी निरानन्द जी ने कहा कि अभी इन्हें अपनी
रहता सुनाने हों । हमारे पध्यातु यदि समय मिले, तो
भजन और पुण उपदेश सुना देंगे । यह सुन कर सब पुण
ए और आनन्द अवि जी महाराज ने अपनी आत्मबधा
नी प्रारम्भ की ।

“ प्रिय महारमा गण तथा सज्जनों ! मेरे पिता जी व्या-
करण करते थे । परन्तु बड़े दुश्चरमक थे । वे व्यापार में भी
नदारी के साथ काम करते थे । हमें मटेब वे नेक शिक्षा
दा करते थे एवं हमारे चरित्र का बड़ा ध्यान रखते थे ।
वे पवित्र जीवन और हम महारों का मुक्त पर विशेष
तब पढ़ा । मुझे कोई घुली आदत न थी और मैं घुरे लड़कों
साथ खेलता भी न था । मैं नित्य सन्ध्या करता और
छोटा व्याख्याय करता था । जहां बड़ी भी उपदेश होता,
अथवा सुनने जाता । मैंने एक कापी बना ली थी । जो अच्छी
से सुनता, वे सब हम कापी में नोट कर लेता था । जो अच्छी
बना या भजन सुनता, उन्हें दूसरी कापी में लिख लेता था,
तब जब समय मिलता, उन कापीयों में से एक लें कर पढ़ता
। पर मैं सुनता, एक दिन के लिये न बड़ा पथर उठाने
। अपने हृदय में, हमारे बड़े लड़के से बड़ा

की । सांसारिक सुखों की असारता का ऐसे मुक्त
वर्णन किया कि उसका मेरे दिल पर विशेष प्र
शङ्कोने करमाया कि जो लोग इस संसार के पदार्थों
करने में लगे रहते हैं, वे यह नहीं समझते कि
सगुणेश्वर हैं । इस संसार में सदैव परिवर्तन हो
जहाँ कल हमें मासादृष्टिगोचर होते थे, आज
राज है । सभी एक सत्जन ने कहा था कि
सम्बन्ध रखते वाले भजन ही न सुनाए जायें।
संसार निस्सार और नीरस ही दिखाई देता है । मुझे
भजन अच्छे लगते हैं । जब महात्मा जी ने ऐसा ही
गाया था, जो मुझे बहुत प्रिय लगा था । वह मुझे घर में
है और मैं उसे सुनाता हूँ :—

जहाँ बीगता है, वहलें कभी आकाश पर हलें
जहाँ गायन है जहाँ रहते, कभी बसने बसा
जहाँ चढ़ियल है मैरा और मरामर एक बार
कभी या कमरा है या ये, जमन ये और शहर
जहाँ है संगरेहें ये जहाँ बाह्य है ते
जहाँ कंधर बदे है अब, कभी बनने मोह
जहाँ सुनमान जंगल है, जहाँ है शहरे सब
कभी क्या क्या नें हतामे बहा, और होमोना
जहाँ आकाश आकाश का कभी दुःख है कभी
'ह' क्या क्या है अब और क्या क्या देना है

आकाश आकाश का कभी दुःख है कभी

जहाँ आकाश आकाश का कभी दुःख है कभी
जहाँ आकाश आकाश का कभी दुःख है कभी

जी हमको बड़े प्रेम से मिले। आदर से बिठाया घोंघ
हाल पूछा। पिता जी ने संक्षेप में मेरी इच्छा
भगत जी सुनकर अतीव प्रसन्न हुए और कहने लगे, बच्चा
मनुष्य जिनके हृदय में पूर्ण युवा अवस्था में ऐसे
हो जायें। साधारणतया मनुष्य वृद्ध भी हो जाते हैं।
कांपने लगते हैं। सिर हिलता है। इन्द्रियां विचर
वही बात होती है कि—

घोरी की है यह आसुर या सज्जना है कोई,
एक एक दाग्त अपना हिलने लगा रहन है।

ऐसे दशा में भी मनुष्य विषय भोगों का
करता। इसकी अपवित्र इच्छाएँ बनी रहती हैं। इसे
जरा भी विचार नहीं आता।

अकसौस सफेद हो गए बाज तेरे,
लेकिन है ब्याह अब भी एमाज तेरे।
तू जुत्ते सुती बना हुआ है अब तक,
हुनियाँ पे इनूत पड़े हैं आज तेरे।

ऐसे मनुष्यों को जीवन के उद्देश्य का विचार
नहीं होता। ये आत्मरथ का शिकार होकर पड़े रहते हैं।
खोजने।

मे क्या या किस लिए भेजा गया इस बारे में
न अब तक मूर्ख को पहचानना न कुछ राशि मरदा
भगत जी ने मेरे पिता जी को कहा कि आज है
व्यवस्था है कि मुझसे बड़ा ऐसा सुपुत्र अवश्य हुआ है।
भगत जी ने कहा कि अब मैं तब तक स बात खीट करता हूँ

सोच लाए और शाम को अनेका मेरे पास आया।
मेरा दिल का बोझ हटका होगया। पिता
'बहुत अच्छा' कह कर मेरे साथ बैठ कर
की प्रतीक्षा करने लगा। पांच बजे के करीब मैं
आया। लेकर भगत जी की सेवा में उपस्थित हुआ।

भगत जी मुझे देख कर बैठ लड़े हुए।
बगाया, प्यार किया। और बैठ जाने का
गवा वो हमारी निम्नलिखित बातचीत हुई।

भगत जी—सुनाओ वरत ! आज प्रातःकाल
मौन रहने का कारण ठीक समझा था ?

मैं—हां महाराज ! मैं अपने जिज्ञासु जी के
कर बात न कर सकता था।

भगत जी—अच्छा तुम अपना प्रश्न पूर्ण
बुझ देने का प्रयत्न करेंगे।

मैं—महाराज ! मेरा दिल संसार का स्थान
है। इसमें कुछ रह नहीं।

भगत जी—संसार को छोड़ कर क्या स्वप्न
काशीने। संसार को क्यों छोड़ सकता है ? रह्यो ही
पर ही रहेंगे।

मैं—मैंने देखा कि वा है कि संसार क इतने ही
का है कुछ नहीं क्या सकता। मैं खुद ही क्या रहूँ

भगत जी—स्वप्नचित्तों का कहना नहीं। --
का है स्वप्नचित्तों का कहना है। यदि

३ मनुष्य संसार में रहे तो वह अपना कल्याण भी कर
ता है और औरों के लिए बोन भी नहीं होता । इस रहस्य
भी मनुष्य समझ लेता है वह ऊपर से तो अपने बीबी बघों
भार करता है, परन्तु उसके दिल की तार परमात्मा से
निघट रहती है । वह अपने आत्मा को भगवान् के भजन
विवर रक्ता है । जाहिरा तौर पर वह धोड़ों और ऊंटों पर
रो करता है, परन्तु उसका हृदय प्रत्येक प्रकार के कार्यों से
र होता है । संसार में वह घन दौलत कमाता है । परन्तु
चा दिल भगवान से जुड़ा रहता है ।

मै—भगत जी हमारा जिस तो एक ही है । इसे चाहे
जी तरफ लगा लें । कहा है—

जिम शरुस को उठवा की तलबगारी है ।

दुनियां से हमेशा उसे बे करारी है ॥

एक चराम में कित तगढ़ मनाएं दोनो ।

गाफिल यह छाव है, वह बेगारी है ॥

भगत जी—बेटा ! आप तो बड़े बुद्धिमान हैं परन्तु यदि
तो लोग हमो विचार के हो जावें तो त्यागी लोगों के माने
। का प्रबन्ध कौन करे ? संसार के सब काम कैसे चले ?
। बाडो कौन करे ? कपड़े कौन तय्यार करे ? भेष तो यही
के संसार में रहता हुआ मनुष्य बैरागी बन कर रहे । जैसा
एक हिन्दी के कवि ने कहा है—

न जग त्यागो न हर को भूत जाघो जिन्दगारी में ।

रहो दुनिया में जो जैमे कवन रहन है पानी में ।

मरम रहे संसार में मन को रखे पास ।

‘रेम न हो संसार में वह जाने मम दास ॥

मैं—महाराज ! यह कहने की बातें हैं ।
 करके मनुष्य अपने आपको पवित्र कैसे रख
 दिल १ तेरा एक इसमें वे ही।
 बलफतें दो दो समा सकती नहीं ॥
 होवे जिसदिल में मेरी बलफत की जा।
 और की बलफत का इसमें काम क्या ॥
 सुन के यह इक की तरफ हाथ अपना जोड़।
 सब की बलफत से गहरे मुँह भरना मोड़ ॥

भगत जी—प्रियवर ! मैं
 जानूँ । इस अवस्था में आपका इन गुड़
 प्रकार स्पष्ट रूप से समझना प्रकट करता है कि
 मैं विशेष चमक पैदा होगी । परन्तु केवल वरुणों
 संसार नहीं छोड़ा जाता । यदि दिल में इच्छाएँ हों
 तो जंगल में जाकर बैठना भी उचित है । पर मैं
 मनुष्य सब कठिनाईयों का सामना करता हुआ अपने
 इन्द्रियों को बरा में रख सकता है, वह वस त्वागी है
 जो दूसरों के दुकदों पर निर्गोद करता है और
 लक्ष्मी और मोह से रक्षित होकर पवित्र नहीं बनता ।
 तुम्हें सनाता हूँ कि मनुष्य को किस प्रकार का जीव
 चाहिये ।

तर्क दुनिया इक लयाने साम है ॥

मिन्दगी जहो उद्द का नाव ।
 मोन क्या है काम से आराम ॥

१ दुनिया का व्यापन ।

नुरादिलों के सामने होना खड़ा ।
 सर फरोशों का यही पैगाम है ॥
 जानता है जो चलन्ता भीत से ।
 उस का ही दुनियां में नेक इंसान है ॥
 जान देना, कौल से फिरना नहीं ।
 हज़ प्रश्नों का यही वो काम है ॥
 रबो गम सह कर के जीना शान है ।
 राम से मर जाना भी कोई काम है ॥
 बिलबिलाना बहचहाना रात दिन ।
 जिन्दगी गोया नुराी का नाम है ॥
 हर समय और हर घड़ी जो नुरा रहे ।
 बन बही दुनियां में शाद और काम है ॥
 मर गया जो फर्ज़ की तकलीफ में ।
 दोनो दु नयां में उसी का नाम है ॥
 दावे से कहता हूं नुरादिल एक बात ।
 तर्क दुनियां इक उपाते खाम है ॥

मैं—भगत जो मैंने आप का बहुत सा समय लिया ।
 आपका बड़ा श्रुतज्ञ हूं । आपने इस विषय पर बहुत प्रचार
 ला है, परन्तु मुझे अभी सन्तोष नहीं हुआ । फरसी के दो
 वियों का कर्मान मेरे ध्यान को आकर्षित कर रहा है । उसे
 आप के सामने पेश करके आप से सविनय आज्ञा दूंगा और
 हर किसी दिन आपको मेरा मैं उपस्थित दूंगा । एक कवि ने
 इस प्रकार कहा है—

आदे नैर मे गद व बादेन आदे नुरा कमतर ।
 चुं परशद खाने मे बाराद पना है ब खाने ज कमतर ।

अथोत् यदि मनुष्य किसी और वस्तु को
तो प्रभु की याद अवरय कम हो जाती है। क्योंकि
यों यदि हमारे मनुष्य पुन आये तो स्वाभाविक
के स्वामी के लिए वहाँ स्थान कम रह जाता है।

और हमारे कवि ने एक मन्त्र के हार्दिक भावों
प्रकार वर्णन किया है—

आ कस के तुरा शानासन जाँ रा ये कुम्भ ।
परहिम्रो अटपल व शानुमा रा ये कुम्भ ।
बीजाने कुनी हर के [ब्रह्मेश ब्रह्म] ।
बीजानप तु हर के जहाँ रा ये कुम्भ ॥

अर्थात् वे प्रभु जिस मन्त्र ने तुम्हें
अपनी ज्ञान की भी परवाह नहीं करता। वह
और बार बार में भी अलग हो जाता है। यदि हम प्रभु
को छोड़ें तो ज्ञान भी बहता है तो वह केवल
अर्थात् वह तो ज्ञान का आविर्भाव लेना भी
करेगा।

जगत् को—कल्प हो त्रिव कल्प । नृप हीनो
विष्णु से है कुल और भी यह मन्त्रा है और
यह अन्तर्हीन मन्त्रा है वस्तु वास्तव में कल्प
कल्प है कल्प ही किसी समय अवरय आये।

कल्प का ही अन्तर्हीन मन्त्र है वहाँ से
कल्प का ही अन्तर्हीन मन्त्र है वहाँ से
कल्प का ही अन्तर्हीन मन्त्र है वहाँ से
कल्प का ही अन्तर्हीन मन्त्र है वहाँ से

ने में लगा रहा, परन्तु किसी अन्तिम परिणाम पर न पहुँच सका। जब मैं दोनों तरफ की युक्तियों की तुलना करता, तो मुझे ना पक्ष भारी प्रतीत होती। कुछ दिन व्यतीत हुए ही थे कि जैन साधु शहर में चौमासा करने के लिये पधारें। उन्होंने नौक्या प्रारम्भ की। वे प्रति दिन प्रातःकाल कथा करते हैं भी वहाँ जाता था। एक दिन उन्होंने कहा कि यदि हम अपने कर्तव्यों का ठीक रूप से पालन करें और जनदारी से जीवन व्यतीत करें, तो जन्म जन्मान्तरों के व्यतीत होने के पश्चात् वह भी अपना कल्याण कर सकता है, परन्तु बुझने से कल्याण के मार्ग की सड़क शीघ्र से शीघ्र तै हो जाती है। एक उदाहरण देकर उन्होंने समझाया कि मनुष्य बैल-गाड़ी पर सवार होकर अपने गन्तव्य स्थान की ओर जा रहा है और दूसरा मोटरकार पर बैठ कर, तो यह बात ठीक है कि वह दोनों अपने स्थान पर पहुँच तो जावेंगे परन्तु इस बात में कोई इन्कार नहीं कर सकता कि जो व्यक्ति मोटर पर सवार है वह शीघ्र ही वहाँ पहुँच जावेगा।

सज्जनों! इस बात का मेरे दिल पर बड़ा प्रभाव पड़ा। मैं अपना हार्दिक आकर्षण भी इसी ओर था। जब कथा समाप्त हो गई और सब लोग चले गये, तो मैंने मुनि जी से निवेदन किया कि मुझे दीक्षा दी जावे। उन्होंने पूछा 'क्या आप माता पिता जीवित हैं?' मेरे हाँ में उत्तर देने पर उन्होंने कहा कि जब तक तुम उनसे आशा न लो, तब तक तुम्हारी दीक्षा नहीं हो सकती। यह तो एक बड़ी भारी बाधा उपस्थित हो गई। मुझे आशा न थी कि मेरे माता पिता आशा दे देंगे। मेरे पिता जैन महात्मा का उपदेश सुनने भी कभी न गए थे। मैंने उन्हें प्रेरणा करके कथा में जाने के लिये राजा किया।

‘‘तु मेरे दिल में उबाल अवश्य था जिसे उचित अवसर मिलने
[प्रकट करना चाहता था ।

एक दिन शाम के समय मैं घर में कुछ काम कर रहा
।। पिता जी पड़ोसी के घर से आर और स्वयं कहने लगे,
‘‘बेटा ! यदि जीवन का यहो फल है और इसी तरह मौत किसी
ही समय आकर दबा सकती है, तो मेरी तरफ से तुम्हें आज्ञा है
कि तुम जिस प्रकार चाहो, अपने जीवन का सुधार कर लो ।’
पिता जी की यह बात सुनकर मुझे अत्यन्त दुःख हुआ । परन्तु
मैंने इस भाव को दबा लिया और पिता जी से कहा, ‘‘बेटो
जि जी के दर्शन कर आवें । हम दोनों वहाँ गए । कुछ समय
के धर्म-वार्ता होने के पश्चात् मैंने मुनि जी से निवेदन किया
कि मेरे पिता भी ने मुझे दीक्षा लेने की आज्ञा दे दी है । मुनि
जी ने जब पिता जी की ओर दृष्टि डाली, तो पहले तो वे कुछ
तन्मिथ ने हो गए । फिर कहने लगे, ‘‘हां महाराज ! मैंने
मनुष्य के शरीर की अस्थिरता को अपनी आंखों से देखा लिया है ।
अब मैं अपने पुत्र के मार्ग में बाधक नहीं होना चाहता । अब
मुझे कोई आपात्त नहीं है ।’

कुछ समय के पश्चात् आवश्यक आज्ञाओं का पालन करके
मैंने दीक्षा ले ली । उस समय जैन गान्धान की एक नवयुवति
ने भी दीक्षा ली । अब मेरी माता ने यह देखा कि वह आनूपलों
से लड़ी हुई सभा में आई और हमने दावा लेने का पापरा की ।
फिर थोड़ी देर के पश्चात् ही वह साधुवेश में आ परिभ्रमण हुई ।
इस अमाधारण परिवर्तन ने मेरी माता के हृदय पर बहुत अकस्मात्
प्रभाव डाला । पहले तो वह मेरे माता के कारण राबहा था
परन्तु फिर उसके मुग पर शक्ति और सन्तान की मन्त्रक दृष्टि

परन्तु यदि वह अपनी इच्छाओं का दमन नहीं कर सकता
र सांसारिक विषय वासनाओं के लिए भटकता फिरता है, तो
सन्यास-आश्रम के लिए कलङ्क है। वह पहले से भी अधिक
। का योग सिर पर उठाता है, क्योंकि बाह्यतः पूज्य रूप बना
कर दुष्कर्मों पर विजय प्राप्त नहीं करता। साधु जीवन का अर्थ
यह है कि मनुष्य अपनी गृहस्थाओं का त्याग कर दे और
ना सर्वस्व अपने भाइयों की सेवा के लिये बलिदान करदे।

दूसरी ओर यदि एक गृहस्थ अपने कर्तव्य का पालन
। नदारी और प्रेम से करता है, अपने व्यापार में सचाई और
। य से काम लेता है, वह भी साधु ही है। यद्यपि उस के हृदय
सन्यास लेने की इच्छा पैदा नहीं होती, परन्तु घर में ही
। त के समान निर्लेप और पवित्र जीवन व्यतीत करता
नेक कमाई करता है और उसका सदुपयोग करता है, तो
। गृहस्थ-आश्रम में रहता हुआ भी अपना कल्याण कर
कता है। तात्पर्य यह कि यदि गृहस्थ बने, तो अपने गृहस्थ-
। श्रम के कर्तव्यों का सुन्दरता से पालन करे। यदि साधु
। ने की सही भावना हो और सदा वैराग्य हो जावे तो साधु
। वन ग्रहण करे। फिर साधु जीवन के सब नियमों का पालन
रे। उनमें किसी प्रकार की कमी न आने देवे। यदि कोई केवल
। श्रम से बचने के लिये झूठे वैराग्य का आविष्कार कर
। वन आनन्द लूटने के लिये या किसी अपावत्र विचार से
। धु बनाता है, तो वह मन्यास-आश्रम का कलङ्क है। कोई
। मा भी आश्रम में हा। उसका जीवन उसी प्रकार का हीना
। दिये—

न ही दूसरे से ऐसा करवाना । मन वचन और काया से
व्रत का पालन करना ।

२—आजीवन झूठ न बोलना । क्रोध, लोभ, भय, और
मदाक से परहेज करना । झूठ बोलने वालों का समयेन
वालों को अच्छा न समझना । मन वचन और काया से
व्रत का त्याग करके हर एक बात का ठीक ठीक स्वरूप प्रति-
करना ।

३—आजीवन चोरी न करना । किसी की आशा के बिना
तेनका भी न उठाना । न स्वयं चोरी करना न दूसरे से
ना और न ही चोरी का अनुमोदन करना । मन वचन और
से इस व्रत का पालन करना ।

४—ब्रह्मचर्य का पालन करना—स्त्री, जानवर या किसी
जीव के साथ विषयो का त्याग करना । मन वचन और काया
दशा में हर समय ब्रह्मचारी रहना । स्त्री के शरीर को
ना । आज ही की पैदा हुई लड़की के शरीर को भी हाथ न
ग । जिन कपड़े या आसन पर स्त्रियाँ बैठ चुकी हों उसको
भी घड़ी तक न छूना । भोग क्रिया को अपनी आँखों से भी
लना । दूसरे जाँवों का ब्रह्मचारी रहने का उपदेश देना ।
र, भग, चान, पास्व आदि सब प्रकार की नशी वाली
में परहेज करना तथा दूसरे को न करना ही उपदेश देना ।

५—अपरमर्श—मनस्व भाव को न दिखाना । कोढ़ी या
तक पान न रखना । रात को भाजन न करना और पान
पाना । देवाई तक भी न लेना । बारह महीने छाया में

सोना । सरदी गरमी आदि बरों को सहन करना ।
 एवं ध्यान में रत रहना । रेलगाड़ी, मोटर सारी, रथ
 तांगा, बैलगाड़ी या किसी भी प्रकार की सवारी पर
 मदैव पैदल यात्रा करना । भावण, भाद्र, चाँचन को
 इन चार महीना के अतिरिक्त किसी भी स्थान पर
 एक एक महीने में अधिक नहीं ठहरना । अथा व
 घर्म प्रसार के लिये भ्रमण करते रहना । किसी भी
 हर्म वनस्पति का स्पर्श न करना । जो मोहन शत्रु
 तय्यार किया गया हो, उसे प्रदण न करना । नि
 निमग्नता स्वीकार न करना किन्तु मधुरी इति
 लेखर अथवा श्रीवन-निर्वाह करना । निर्दोष मित्रों
 निर्वाह करने हुए लोगों को सम्मार्ग पर चलने क
 देना । आग तथा कूट के पानी को न छूना । इसमें
 पवित्र वस्तुओं के धोवन का पानी निकार कर देने हैं ।
 मैत्रा घोर अविविक्त नहीं होना ।

अदैव अदिमा का प्रचार करना । जीव के
 बनाने का उपदेश देना । जो लोग हिमा या पाक एवं
 युक्त हैं, उनका उपदेश के द्वारा सुधार करना, एवं
 प्रेम की शिक्षा देना । वर्ष में न बार कोष का माह
 अनादर को सहन करना । जेमा को माह अनादर
 पर अनादर करना । नून न रहना । मदैव नो नि
 र्वाह करना । अथवा मदैव नो निवाह करना । अथवा
 अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा
 अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा अथवा

द्वारा

रना किन्तु इन्हें मोक्ष का साधन समझ कर पालन करना ।

जैन माधु गृहस्थ व सब भगवों से मुक्त होया है । धन, और स्त्री से इमे कोई सम्बन्ध नहीं होता । इस लिये वह गहों से दूर रहता है । साधारणतया उपर्युक्त तीनों वस्तुएं ही का मूल कारण होती है । आपने किसो जैन मुनि को व या जैन में न देखा होगा, क्योंकि वह ससार में बसेहों होता है ।

इनका वह कर भी आनन्द अति जी रहने लगे माधु-
ही और भी कई छोटी छोटी बातें हैं, क्यों न अब समय हो गया है और मैंने बिहार करना है इस लिये अब अपने को मनात्र करता हूँ; हाँ बिदा होने से पूर्व मैं एक भजन साथ मिलकर दोलना चाहता हूँ । पहले मैं बोलूंगा, पीछे आप बोलें । यह भजन सदा गाने के लिये भी है ।

लोगों ने आनन्द अति जी का बहुत बहुत धन्यवाद और रहने लगे कि हमने शास्त्र न था कि जैन मुनि की वृत्ति इतनी कठिन होती है । धन्य है ये लोग जो इतने प्रयत्नों का पालन करते हैं । फिर उन्होंने कहा कि हम प्रवरय बोलेंगे । अब निम्नलिखित भजन भी आनन्द अति जी ने—

प्रेम सङ्गोच

जा—ये मोठा प्रेम पाला कोई बिस्मल बिस्मल वाला ।

। गुर है प्रेम है देव प्रेम धम है प्रेम है मेला

। हो केरा माया कह देवेना बिस्मल वाला

यह मोठा प्रेम पाला कोई पद । १२७७७७

सच्चे मनुष्य .

हर वक्त झमाने का सितम सहते हैं,
हासिद जो बुरा कहते हैं, चुप रहते हैं ।
जो नेक हैं वे बंदों को भी कहते हैं नेक,
वे सुनते हैं बुराई पर न बुरा कहते हैं ॥

संसार में जो मनुष्य आते हैं, वे प्रायः अपना जीवन व्यतीत करते हैं, मानो अंधेरी रात में एक घने जङ्गल में जा रहे हों । वे नहीं जानते कि हम कौन हैं ? कहां से आये ? कहां जा रहे हैं ? किधर जाना है ? क्यों जाना है ? और कौनसा रास्ता ठीक है ? प्रत्येक मनुष्य को अपना मार्ग देखने के लिये एक टमटमाती हुई लालटेन मिली हुई है । कुछ लोग इस लालटेन की चिमनी को अपने पापकार्यों एवं कुसंस्कारों से इतना गंद कर लेते हैं कि उन्हें अपना मार्ग बिलकुल दिखाई नहीं पड़ता । वे अंधेरे में भटकते, ठोकरें खाते, गिरते और चोटें खाकर कई प्रकार के कष्ट उठाते हैं । परन्तु कुछ लोग ऐसे हैं जो अपनी पवित्रता और शुभ कार्यों से इस लालटेन की चिमनी को इतना साफ कर लेते हैं कि उन को अपने गन्तव्य मार्ग का मार्ग साफ दिखाई देता है । इस इस लालटेन के आश में वे अपने मार्ग पर बढ़ते चले जाते हैं । वे लोग केवल अपनी यात्रा ही नहीं करते बल्कि अपने साथ और भी बड़े मनुष्यों को ले जाते हैं यदि वे अद्वानु हो और उन का विचार विचित्र हो ।

यह समार सैरगाइ नहीं। न ही यह कागज है किन्तु यह तो परीक्षास्थल है, कागज हमारा मन है। कसम है। हर एक मनुष्य को प्रश्नपत्र मिलते हैं। साधारण नहीं होते। परन्तु उन के प्रश्न किस प्रकार के मनुष्य कोन है? किम वरेश्वर के लिये आया है? के श्रेय को वह कदां तक पूरा कर रहा है? इनके रूप में दिये जाते हैं। जो जैसे उत्तर लिखेगा अर्थात् करेगा, वह वैसे नम्बर पायेगा। इस परीक्षा को असफलता इसी बात पर आश्रित है कि मनुष्य पर्ये है हे अर्थात् उस के कर्म किस प्रकार के हैं।

जिस कागज पर इन प्रश्नों के उत्तर लिखे जायेंगे। हमारा मन है। यदि यह कागज सफेद है, इस पर स्याही नहीं गिरी, तो उत्तर साफ साफ लिखे जायेंगे। कागज पहले ही मैला है। तो उस पर क्या लिखा जा सके। मन को शुद्ध रखने के लिए इसे सम अवस्था में रक्खना। जैसे हमारे शरीर में आग, पानी, हवा और पृष्ठीय तत्व निश्चित से रखे हुए हैं। यदि वह निश्चित कायम रहे, तो स्वस्थ रहता है, नहीं तो कोई न कोई रोग लग जाता है। प्रकार इस मन की वृत्तियों को तरा में रखने से है यह मन रह सकता है। जैसे हलवा या मिठाई तटवार करतीं नममें आटा, घी और चीनी आदि सभी सामग्री नियत में डाला जाता है। इस परिमाण में कम या अधिक तो वह चोख अच्छा नहीं बनता। एस ही यदि मन की वृत्ति में न रक्खी जायें तो वह खराब हो जाता है और बीमार है। मन के अवस्थान होने पर मनुष्य अपने प्रश्नपत्रों में

नहीं हो सके, अतएव परोक्षा में असफल हो जाते हैं। मनुष्यों में यही लक्ष्मी है, उनका यही गुण है एवं यह महत्ता है कि वे मन की वृत्तियों को ठीक बन्दाजे से नहीं बँधे इधर उधर नहीं होने देते। इससे मन पवित्र नहीं हो पाता और अनेक प्रभपत्रों के उत्तर स्वच्छ मन पर बिना किसी मद्दोष के लिखते चले जाते हैं जिसका फल यह होता है कि परोक्षा में सफल हो जाते हैं।

प्रदेश मनुष्य संसार में अपनी भावना के अनुसार अपना स्थिति करता है और अपनी भावना के अनुसार ही पादृष्टि करता है। इस बात को उदाहरण देकर समझाना पड़ता है।

[illegible]

तीसरी कपोत लेश्या : इसका रङ्ग कबूतार की जैसी
रङ्ग के समान और स्वाद कच्चे आम जैसा होता है जिसे
खटाई और कढ़वाहट मिली हुई होती है ।

चौथी तेजो लेश्या के नाम से पुकारी जाती है । इस
रङ्ग सिमरफ के समान होता है । सूर्य अस्त होते समय आर
का जैसा रङ्ग होता है वैसा ही मोने की तरह चमकने वाला
इस लेश्या का होता है इसका स्वाद पक आम के रस के रस
के समान होता है ।

पाँचवी पद्म लेश्या है । इसका रंग हल्की या सफेद
कृत्त के रंग जैसा होता है और स्वाद दूध या गन्ने के रस के
होता है ।

छठी शुक्र लेश्या कहलाती है । इसका रंग दूध के
सफेद और स्वाद मिसरी के ससान बहुत ही मीठा होता है ।

इन लेश्याओं का स्पर्श भी वर्णन किया गया है । पर
तीन प्रकार की लेश्याओं का स्पर्श गाय की जिह्वा के रस
समान होता है । विद्युत्ती तीन प्रकार की शुभ लेश्याओं का
रस के स्पर्श के समान होता है ।

शास्त्रों में इन लेश्याओं की गन्ध का भी वर्णन किया
है । परती तीन प्रकार की लेश्याओं की गन्ध मरे हुए कुत्ते
दुर्गन्ध के समान होती है विद्युत्ती तीन प्रकार की लेश्याओं
गन्ध चन्दन की सुगन्ध के समान होता है

परती तीन प्रकार की लेश्या अशुभ और विद्युत्ती
प्रकार की लेश्या शुभ होती है । मनुष्य का चरित्र कि प
नन प्रकार की लेश्या का निरूपण आनंद और वि

को पकवा नहीं दोड़ मिले या न मिले ।

हक में सब ही के मगर वे तो दुका करते हैं ॥

को शाद है परावर उनकी निगाह में सभी,

कच्छा जाने न उसे न उनका मिला करने है ।

जैन भासों को आशा है कि महा पिछली तीन प्रकार की
कल्याण । इन प्रकार की भावना के लोग इन संभार में
जान करते हैं और सुखी रहते हैं एवं परलोक भी उनकी
जाना है । शुभ करने भी बड़ी बांधते हैं । उनकी शान्ति,
और ज्ञान इस प्रकार फैलना है जैसे ऐतह के साफ
निगाह ।

मर्त्य की ब्रह्मण्ड बन्द डी नारायण भी शुद्ध लेखा है
। इनके हृदय में किसी के विष द्वेष न था । वे प्राणिमात्र
की निगाह से देखते थे, प्राणिमात्र का भला करना
। ऐसा करने में उन्हें आनन्द काठा था यही उनके
का परमात्म ब्रह्मण्ड था । हमें उनका अनुसरण करके
भावना को शुद्ध और निमज बनना चाहिए ।

जगत्त चहो न सुगई किनी की अकवा,

न तुम्हाग भी जहां में कोई बदखार न हो ।



महाराज श्री के चतुर्मास

जैसा कि पहले लिखा जा
सम्बत् ११६० में दीक्षा ली। आप ने अपने गुरुदे
दिवाकर पूज्य आचार्य श्री आत्मा राम जी महाराज
कमलों में रहते हुए आठ चतुर्मास किये और
सुख सेवा भक्ति की। इस अल्प समय में ही
पर्वोत्स अभ्यास किया और कमी कमी अपनी
जन समाज को ज्ञान भी पहुँचाते रहे। आप के
किया-काण्ड और संयम-चारित्र्य को देखते हुए
भी पूज्य आचार्य जी महाराज करमाया करते थे
चन्द जी बहुत अच्छे साधु बनेंगे। अतः इन आठ
पञ्चात् भी आचार्य जी महाराज ने
भी जी को पृथक् चतुर्मास करने की आज्ञा दे दी।
गुरुमहाराज से पृथक् होना न चाहते थे,
को आज्ञा का पालन करना भी आवश्यक था,
चतुर्मास आप ने सम्बत् ११६६ में सुनाम पट्टियाँ
किया। पहले ही चतुर्मास में धर्म-ध्यान का
इस समय के आचार्य भी सोहन साह जी महाराज
गुणारविन्द से बचाव और धन्यवाद भेजा।
अपनी ओजस्वी वाणी का सफल प्रमाण वहने ही
दे दिया, इस लिये अगस्त सम्बत् ११७० का चतुर्मास
को प्रार्थना पर पञ्चाङ्ग की राजधानी काहीर में हुआ
यस प्रचार करते हुए अनेक भव्य प्राणियों को

सूर सन्वत् १६७१ का चतुर्मास आप श्री जी ने कसूर में किया। इस चतुर्मास में भी खूब धर्म ध्यान।। वहाँ पर एक महाजन जैन धर्म का बड़ा द्वेषी था। आप गोचरी के लिए जाते और उसकी दुकान के आगे से होते तो वह कुछ उपहान सा किया करता था। आपने भी जे मन में यह ठान ली कि इस व्यक्ति के हृदय में जो द्वेष हुआ है उसे निराकृता ही चाहिए। अतः आपने यह मन सा बना लिया कि जब भी उसकी दुकान के पास से गुना तो पाँच सात मिनट रुकें होकर उस महाजन से बातें करना। इस प्रकार उसके हृदय पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि जे उस विद्वेष को स्वयं ही छोड़ दिया तथा प्रतिदिन जे आने लगा। भावक के ब्रत धारण किए और क्या समय ही सुख पर सुखवस्त्रिका लगा कर सामायिक करने गया। यह था आप श्री जी के पवित्र जीवन और मनोहर दिशों का प्रभाव। महापुरुष पार्ववटी होते हैं जो उनके नरक में आता है उसे भी सोना बना देते हैं।

इसके पश्चात् जो चतुर्मास हुए उनमें खूब जैन धर्म का बार हुआ, बड़े प्रभावशाली व्याख्यान हुए और जनता में धर्म प्रभावना हुई।

खरड़ सन्वत् १६७२ का चतुर्मास आपने खरड़ जिला अन्वाला में किया। इस चतुर्मास में आपने संस्कृत वाक्य पढ़ा। संस्कृत वाक्य का विषय बड़ा कठिन और टित है, यह बाल्यकाल में पढ़ा जाता है। क्योंकि उसे ठीक करनी पड़ता है। तत्पश्चात् उसका अर्थ मनमन्य के विशेष समय देना पड़ता है। परन्तु आपने इन बातों का आप



हैं। संस्कृत साहित्य के विद्वान, लेखकों के बहुत बड़े सन्मेलन
वाले तथा पद्य शान्त प्रवृत्ति के साक्षिक हैं। इन्होंने अग्निसम
समय तक हमारे अस्थिर नायक महाराज जी की खूब सेवा की।

बुढलाडा सन्वत् १९८६ का चतुर्मास बुढलाडा मण्टी

जिला हिमालय में हुआ। इस चतुर्मास में
आपने अपनी जादूधरी बाणी की वद अमृतवर्षा की कि जैन
लोग तो आप पर भी ज्ञान से सुर्षान होते ही थे परन्तु
उनातनधर्मों, धार्यसमाजी और मुसलमान तक भी आप की बधा
लागी पर सुख ही मण। इस चतुर्मास में धार्यसमाज का धार्मिक
प्रसव था। आप भी के व्याख्यान इतने सुन्दर मनोहर
थे सर्वश्रिय होते थे कि धार्यसमाजी लोग प्रथम आप
की उपदेश सुनकर फिर अपने उत्सव का कार्यक्रम प्रारम्भ
करते थे। इस प्रकार जहाँ की साधारण जनता पर आपका
विश्व उपदेशों का बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

इस चतुर्मास में एक भयानक घटना घटी और आपने
बुढी की जनता पर यह कृपा की कि ये लोग इस उपकार को
पर काल तक न भूल सकेंगे। मण्टी पर एक ऐसी विपत्ति
मान पड़ी कि जिससे मण्टी के तबाह होने का पूरा पूरा
रूप हो गया था। उस घटना का विवरण इस प्रकार है कुछ
मलमान गोपातकों ने एक हारजन भाई की संगमो गाय घात
कर दी। यह समाचार आस पास के गांवों में फैल गया और
हा के कृषक लोगों का खून आश मारने लगा। क्योंकि एक
गपराध चमकार का संगमो गाय घात कर दी गई थी इस
कारण उस प्रदेश की जनता में बड़ा रोष भर गया कुछ शस्त्र
भी हाक उस प्रदेश में फिर रहे थे। वे अपनी च-द-र-

अपने दृष्टों और दृष्टियों के हृदयों में भा दो और मोचना तुम्हारा काम है कि किस प्रकार तुम इन चौरसों को पूरा करने हो। हां हम यह कह सकते हैं कि यह एतराज तुम्हें व्यर्थ है। संसार के प्रत्येक व्यक्ति और सम्प्रदाय को अधिकार है कि वह अपनी उत्पत्ति के उपायों को सोचे और वे अनुसार कार्य करे। महागज भी का मारा फर्मान माधु : में था। जैन भाइयों ने पुनः मभा का के पदों के समान : सोलने का निरोध किया। स्कूल खोल दिया गया और अच्छी तरह काम होने लगा। इनमें व्यावहारिक शिक्षाओं तथा धार्मिक शिक्षा का विशेष रूप में ध्यान रखा : है।

चतुर्मास की मनाति पर यहां भा महागज भी की सेवा : अभिनन्दन पत्र पेश किए गए जो कि आगे दिए गए हैं : यहां देखिएगा।

मुषियाना में विहार करके आर फर्माते होते हुए नहोदर : हैं। यहां वेदज स्मृतिरवाल मन्दिरमार्गे भाइयों के हो बोन : गीत पर है। आपने वहां पार पांच हो व्याख्यान दिये :। बरादरी का ध्यान सं-भक्ति के सुधार की ओर लीका। भाई परस्पर विचारने लगे कि एक सम्प्रदायवाला सं-भक्ति : परन्तु यह विचार कार्यनिष्ठ न हो सका क्योंकि महान : यहां से हीमही विहार कर गये और बरादरी सि धार नि-दुःख : गरी नहोदर का 'दहाय करके आर सुकमानदुर मो-ध :। मन्त्र बहुरथल में बरादरी आर नहोदर का 'बहुरथल पर :। नहोदर न 'दहाय 'वि-दुःख मन्त्र न 'दहाय न 'दहाय

हम अपने सङ्गठन के लिये सभी कुछ हमी कर सके।
हमारे मिल बैठने के लिये कोई स्थान हो।
लोगों ने स्थानक फरह स्थापित दिया। जिस
सम्भार हो गया है।

कसूर सुलतानपुर से आप कमूर पहुँचे।

जातिसङ्गठन के विषयों पर व्याख्यान होने
हुए। यहाँ जैनी भाई सामायिक आदि एक किराए के
किया करते थे। परस्पर में प्रेम बढ़े, ऐसा कोई साधन
महाराज श्री के दो तीन व्याख्यान सुनने के पश्चात्
कहा महाराज ! कसूर के लोग बिकने पड़े हैं,
महात्मा अपना खोर लगा चुके हैं, परन्तु कुछ भी
ऐसे ही आप के उपदेशों से भी यहाँ कुछ नहीं होने की
है। यह सुनकर आपने कहा कि हमें तो अपने
करना है और धर्म का नाश बजाना है। तुम इसे
किर खो जो मैं आप सो करना। इस प्रकार की वि
कोरदार व्याख्यान हुए। लोगों के दिनों पर अभी हुई
रगड़ा, तो ये लोग एक दूसरे की खोर मँकने लगे कि
रहा है। हमारे दिनों में उमार मा कैसा पैदा हो गया है।
साधु के उपदेश तो हमारे हृदयों के अन्तर्गत ठक
महाराज श्री कई प्रकार से खोर भिन्न भिन्न दृष्टियों से
में जैन भाइयों का कर्तव्य बतलाने थे। एक दिन
खोर घन के वास्तविक स्वरूप पर व्याख्यान बज रहा
विषय पर नुब प्रकारा डाला। ऐसा प्रकारा डाला कि मुझे
अपने दिना का टटोलने लगे। आप ने दान के वास्तव
राज्य के बहुत से प्रमाण उभरे और युक्तियों द्वारा समझा

सापरवाही और शकलत पर ऐसी शाब्दिक म्हा
के सब पसीना पसीना हो गए और बगलें म्हा
में आपने कर्माया—

मेहार्ण बल चम्पू चम्पू तद्वशात् कर्मिणी।

सुपुरिषाण य रिद्धि सामन्तं सयज्ञ प्रोक्ते।

अर्थात् बादलों का पानी, बाद को बादलों
पल्लव, मन्त्रों का धन दीक्षित सब कुछ परोपकार
होता है। जब यह उपदेश समाप्त हुआ तो
कि हम चिन्ते पड़े हैं। हम पर किसी का उपदेश
पान्थ अब मिसरी की बली तथा असफल के समान
महाराज श्री के उपदेश का एक एक शब्द हमारे
ओर रग रग में भरकर कर गया। बारर निहारे
इकट्ठा कर के ध्यान में बनाने का इह निश्चय कर
हमी समय रकमें लिखी गई। कई साधनों ने सोचा
रकमें तो महाराज पर ही लिखी रह जायेंगी। पान्थ
श्री के उपदेशों ने तो तब तक बाहर दिनों को मोव
या। परवेक हानी महाराज अपने आप दूसरे ही दि
अपनी रकम समा के लक्ष्मी के पास में आया।
बहुत रह गई थी, वह आगने तीव्र बार दिनों में
सब की सब रकमें बंद में जमा करा दी गई। इस
ध्यान में तय्यार हो चुका है

आहो! चम्पू में निहार करके आप काहो को
या ध्यान में होने के समान था।
या ध्यान में होने के समान था।
या ध्यान में होने के समान था।

रादरी की जागृति और साहसपूर्ण कार्य होने की सूचना यहां रहते ही पहुंच चुकी थी। वधर महाराज जी ने पधार कर अपने मनोहर हृदयमाही-वशाख्यान देने आरम्भ कर दिये। 'म' ध्यान, और संगठन के विषय पर अधिक भार दिया। इसके फलस्वरूप लाहौर निवासियों ने भी अपन कर्तव्य को पहचाना और सोचा कि बिना स्थानक के तो हम अपनी भाषा या मोटिंग भी नहीं कर सकते। इस प्रकार वे लोग अपनी जाति के उपाय सोचने लगे और इकठ्ठा करके स्थानक कंठ पापित किया। अब हमसे एक शानदार स्थानक तय्यार हो चुका है। कसूर और लाहौर के लोग आप भी को लाख लाख गन्धवाद देते हैं कि उनके जगाने से वे रूठ बैठे हैं और अपनी टिगों को दूर किया है^१। उन्ही दिनों लाहौर ही में रावलपिंडी

१. ये क्षेत्र अब पाकिस्तान में चले गए हैं। महाराज भी के प्रदेशों से जो वहां कार्य हुए उसके लिये वहां के भाइयों ने काफी अनुरोध किया। पाकिस्तान बनने से अब वह सब कुछ हमें व्यर्थ सा लीज होता है। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं। चाहे महाराज भी अपने अनुभव में यह जान लिया हो कि ये क्षेत्र इस प्रकार गले जाने हैं परन्तु उनका ध्येय तो जैन भाइयों की मनोवृत्तियों को सुधारना था, उन के दिलों में दान की भावना को उत्पन्न करना था, उनको धर्मप्रचार के लिये तय्यार करके भगवान् वीर सत्ये सैनिक बनाना था। जैन भाई चाहे अम्बाला डबोजन के हों चाहे रावलपिंडी डबोजन के हों, जहां कहीं वे रहते थे, जहां में आप ने उपरोक्त भावनाओं को समान रूप से भरा। अब पाकिस्तान के भाई बेराक उन क्षेत्रों को छोड़ आए हैं परन्तु उपरोक्त भावनाएँ तो उनके साथ हैं और दुनिया के किसी भाग में चले जाएँ वे भावनाएँ उनके साथ रहेंगी।

लापरवाही और शरूलत पर ऐसी शान्दिक माद होनी
के सब पसीना पसीना हो गए और बगलें झंकने
में आपने कर्माया—

मेहाणें जल चन्दस्य चन्दनं तरुवरणं कत्रनिषो।
सुपुलिसाणं य रिद्धि सामन्नं सयन्न लोवसः॥

अर्थात् बादलों का पानी, चांद की चारदी,
फलफूल, सज्जनों का धन दीलत सब कुछ
होता है। जब यह उपदेश समाप्त हुआ तो
कि हम चिकने धड़े हैं। हम पर किसी का उपदेश
परन्तु अब मिसरी की बली तथा असफख के समान पर
महाराज भी के उपदेश का एक एक शब्द उनके
और रग रग में असर कर गया। बाहर निकलते
इकट्ठ कर के स्थानक बनाने का रद्द निश्चय कर लिया
जसी समय रकमें मिली गई। कई सज्जनों ने सोचा
रकमें तो कागज पर ही मिली रह जायेंगी। परन्तु
जो के उपदेशों ने तो उनके पथर दिलों को मोम बन
या। प्रत्येक दानो महाराज अपने आप दूसरे ही दिव
अपनी रकम सभा के खजाने के पास ले आया। वे
बहुत रह गई थी, वह अगले तीन चार दिनों में सभा
सब की सब रकमें बैंक में जमा करा दी गई। उस
स्थानक तय्यार हो चुका है

लाहौर कसूर से बिहार करके आप लाहौर पुने
भी स्थानक न होने के समान था। र
सा तथा और बेबाया मकान महल्ले में था जो कि
क बाग्य न था। कसूर जिला लाहौर में है।

दिखाने, पूरे छ मास तक बत्ताही बनने और
 सुधार करने का उपदेश दे किन्तु हम उस से कुछ नही
 समझते और भाति की ऊँचा उठाने का कोई
 हम ऐसी निद्रा में तल्लीन हैं कि करबट तक नही
 हमारे किये हुए मरने का ध्यान है। धिक्कार है
 होने पर। धिक्कार है हम पूछोपचियों को कि हम
 स्वागत नहीं कर सकते। धिक्कार है हमारी
 को कि गुरुदेव हम को ऊपर उठाना चाहें
 नीचे मरें। क्या हमारी नालायकी और अज्ञानता की
 है ? ” ऐसे बुझने वाले वाक्य जब बड़े गुरु से
 लोगों को काफी शर्म आई और उन्होंने कहा कि
 लोचन अपने गुरु महाराज जी का अपमान है कि
 बिना अनुमति की ही नही अपितु छमास की कोई
 इस प्रकार बरादरी के मुख्य मुख्य लोग आपसे
 पहुँचे और वापिस राबतियरही कोटने की शायंश की
 रात जी ने कहा कि अब हम वहाँ से आ
 अपना कार्य पूरा कर दिया है। अब
 हमारी पुष्टी ने हाथ जोड़ कर बिनयी की कि
 सादर ! आप की वापसी बरादरी के लिए बड़ी
 मित्र होगी। सभी का तो जीवन ही परीक्षाक्रम है
 इस प्रकार बार बार बिनयी और शायंश कीये जाने पर
 कहा कि हम बने भी बने परन्तु हमारे जाने
 इस बात का हमें परसे प्रमाण मिलना चाहिए।
 और सबके सब आप ही का विचारने लगे कि वह
 कि वह हमें कुछ भी नही दिया जा चाहिए।

की बरादरी को जेइलम के भाइयों ने अपने हाथों से
कहों ने समा करके उन भाइयों को कुछ घन इच्छा कर दिया।

जम्मू स्वातंत्र्य से विहार करके आया - ११
बरादरी में अपने बच्चों की पढ़ाई
करने का कोई प्रबंध न था और बरादरी के लो-
क्यों में पढ़ते थे । आपने अपने स्थानों के माता
बिना प्रचार के विषय में व्याख्यान देने आरम्भ
कहा कि मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु उसकी अनिच्छा
तक अनिच्छा और अज्ञानता दूर न हो, मनुष्य अपने
समक ही नहीं सकता । बरादरी का यह कथन सुना कि
ने इच्छा करके विचार किया कि हमें अपने बच्चों की
जिसे प्रबंध करना चाहिये । इस प्रकार कहने पर
बरादरी करके हम इच्छा करके प्रकाश कर दिया।
और वहां मोड़े हो दिन ठहरने का विचार
आप विहार की तय्यारी करने लगे । परन्तु
जम्मू का कारभार के मृत्युपूर्व प्रधान मंत्री राव
जनक दीवान बिशनराम साहब C. S. I. C. L.
V. O. महाराज की के कारणों से अनिच्छा
बरादरी के साथ विनती को कि आप कुछ दिन
रुका करें, बरादरी ने जो हाथ जोड़ कर प्रार्थना की
इच्छा साहब और बरादरी की विनती को मंजूर
वहां आया बड़ा पूरा किया अर्थात् २६ दिनों में
विहार करने का तय्यारी करने लगे । बरादरी
को कि महाराज के कुछ दिन और ठहरने के
आपने प्रार्थना में बड़ा 'हम और ठहरने के लगे'

वहां नो दिन ठहरै। वहां से बिहार करके मोक्ष के
 कालिदास आदि म्थानों को पवित्र करते हुए पुनः
 और मन्वन्त १२६६ का चतुर्मास पाटमाना के विद्या
 के पश्चात् आप अरममिह होने के कारण बड़ी छोटी।
 आप को दूसरी बार गुरुकुल के अमर पर पधारने से
 की गई जिसे आप ने स्वीकार कर लिया।
 पर आप ने बिहार किया और वहां से अम्बाला, अमर
 अमर के अमर पर गुरुकुल पधार गए। इस वक्त
 विद्यामन बोकानेर के सेठ चम्पा लाल जी बाँठवाये।
 पर भी आप ने बड़े प्रभावशाली और कर्तव्यमूक
 दिखे। अमर की समाप्ति पर प्रधान जी ने पाँच हजार
 दिया और पाँच हजार बोकानेर में आप हुए
 दिखवाया। इस अमर पर गुरुकुल के प्रधान साक्षात्
 जी भी पधारें हुए थे। इन्होंने प्रधान पर पर
 प्रधान जी के महान् स्तुत दान दिया। अमर प्रधानों।
 अमर प्रधानों से भी स्तुत दान दिखवाया और इन्होंने
 सारा दो। इन के अमाइ को देख कर रोष प्रधानों
 को अमर दान दिया। इस वक्त इस वक्त इन्होंने
 रक्त चर्चित हो गई। और चौदह हजार लक्षों
 इस प्रकार कैलाश इत्यादि वरों एक दम चर्चित हो गई।
 की दया मुकर गई।

अम्बाला

इसी गुरुकुल के अमर पर अमर
 के माई आप हुए थे। अमर प्रधानों
 मोक्ष अमर का अमर प्रधानों का अमर प्रधानों
 अमर प्रधानों का अमर प्रधानों का अमर प्रधानों
 अमर प्रधानों का अमर प्रधानों का अमर प्रधानों

रुचियाना पधारें। वहां अपने गुरुवनों के दरों करके
हर तप नेशों को पवित्र किया। कुछ दिन उनकी
गह हर अपने अम्बाला की ओर विहार किया
माहा, मन्ना, नरही गोविन्दगढ़, सरहन्द आदि जैत्रों में
य पधारते हुए अम्बाला से आठ नील शम्भू गांव में
गए। वहां अम्बाला के बहुत से भाई आपका स्वागत
के लिये पहुँच गए और आपने दिन बड़ी धूमधाम से
अम्बाला नगर में प्रवेश हुआ। आपने पधारने से
प्रां का स्ना हात या अब वस्त्रा वर्तन करते हैं।

मातापुत्रों के पधारने से पहले सूर्य देवता अपनी
और लो हुई किरणों के तेज भातों से अपनी पूरी शक्ति
रूपी बिंदु की उन लोहबिंदु बनने की स्मृति हो
ग। जलने अपना ऐसा तेज प्रकट किया कि दोनहर के
हृदों की छाया भी लुप्त गई। परंपरा अपनी बोध
धर्म की विन्दुओं के लिए लहर रहे थे। लल्लु गुम्फ
र थे और मैं ही पानी न पारर उनहों के शीर्ष में
जो बज्जे हुए रोरों की ठंडक पहुंचने का प्रयत्न कर
गै। रोटी का एक प्रत्न खाने की सोचों का जी न पारर
पानी पी पी कर लेना अपना पेट बराब के सारा
है दे। पेट पानी से भर आया था परन्तु दुःखियों का
गुम्फ हो गया था तब और पानी की मांग करता था।
जैसे मैं हूँ तो पानी की बड़ी बनी है। बरत बरत है
दिल्ली की योग्य श्चु में पानी की कटोरे लड़ी हो जली
जब लिये लल्लु नउहों पर पानी बनने के लय बड़ी
जलत होती है। लोभाय से ही बड़े पुराने अपने पूरे
ब बर कर से जल है। वही है जिसने के अपने बरत

वहाँ नौ दिन ठहरे। वहाँ से बिहार करके सोनर
 कालिका आदि स्थानों को पवित्र करते हुए पुनः गुरुकुल
 और सम्बत १६६६ का चतुर्मास पटियाली के स्थान
 के पश्चात् आप अवरमसित होने के कारण वहीं ठहरे
 आप को दूसरी बार गुरुकुल के उत्सव पर प्रधान
 की गई जिसे आप ने स्वीकार कर लिया
 पर आप ने बिहार किया और वहाँ से अम्बाला
 उत्सव के अवसर पर गुरुकुल पधार गए।
 रियासत बीकानेर के सेठ चम्पा लाल
 पर भी आप ने बड़े प्रभावशाली और कर्तव्यसुचक
 दिखे। उत्सव की समाप्ति पर प्रधान भी ने पाँच हजार
 दिया और पाँच हजार बीकानेर से आए हुए अपने
 दिसवाया। इस उत्सव पर गतबर्ष के प्रधान काका
 जी भी पधारे हुए थे। इन्होंने प्रधान पद पर न रहते
 प्रधान जी के सहस्र स्तुत दान दिया। अपनी धर्मपत्नी
 अन्य हातिवनों से भी स्तुत दान दिलवाया और रुपये की
 कला दी। इन के असाइ को देख कर
 कोशकर दान दिया। इस प्रकार इस वर्ष इस्तीस हजार की
 रकम एकत्रित हो गई। और चौदह हजार गत बर्ष हो
 इस प्रकार इस्तीस हजार रुपये एक दम एकत्रित होने से
 की बराब सुघर-गई।

अम्बाला इसी गुरुकुल के उत्सव पर अम्बाला
 के माई आए हुए थे। उन्होंने
 मौलिक काम का शायना की, जो आपन जैन धर्म दिवाकर
 आया जो आम्बाराम का महागन की अक्षा
 स्वीकार का सा। वहाँ से बिहार करके आप लखनऊ, गोरखपुर

ए लुपियाना पधारे । वहां अपने गुरखनों के दशों बरके
हृदय तथा नेत्रों को पवित्र किया । कुछ दिन हमको
ने रह कर आपने अम्बाला की ओर बिहार दिया
दोसादा, मन्ना, मन्ही गोविन्दगढ़, सरहन्द आदि ऐत्रों में
व्या पहराते हुए अम्बाला से आठ मील राम्भू गांव में
गए । वहां अम्बाला के बहुत से भाई आपका स्वागत
के जिंदे पहुँच गए और अगले दिन बड़ी धूमधाम से
आ अम्बाला नगर में प्रवेश हुआ । आपके पधारने से
वहां का क्या हाल था अब बसका वर्णन करते हैं ।

महाराज जी के पधारने से पहले सूर्य देवता अपनी
उ और तपो हुई किरणों के तेज भालों से अपनी पूरी शक्ति
कर पृथ्वी बिंद की तम लोहपिंड बनाने को स्वारु हो
या । उसने अपना ऐसा तेज प्रकट किया कि दोपहर के
य वृक्षों की छाया भी मुझ गई । पक्षीगण अपनी चोंचों
में बल की बिन्दुओं के लिए तड़प रहे थे । तालाब शुष्क
गए थे और मैंसे बड़ी पानी न पाकर छप्पड़ों के बीच में
अपने बजते हुए शरीर को ठंडक पहुंचाने का प्रयत्न कर
। भी । रोटी का एक मास छाने को लोगों का जी न चाहता
और पानी पी पी कर लोग अपना पेट मशक के सदृश
रहे थे । पेट पानी से भर जाता था परन्तु मुख ज्यों का
शुष्क हो रहता था तथा और पानी की मांग करता था ।
म्बाले में वैसे भी पानी की बड़ी कमी है । बाटर बड़ेस है
लुप्ति भी मीप्स ऋतु में पानी की कमी बड़ी हो जाती
। इस लिये सरकार। नज़दों पर पानी आने के समय बड़ी
कामेन होती है । सोमान्व से ही कोई पुरुष अपने पूरे
जवन भर कर ले जाता है । नहीं तो इसका के आवे भरते

होठों की सँहरा बढनी गई तब उस समय लाला जी ने स्वयं
 हो इस बात की आवश्यकता अनुभव की और बिना किसी के कहे,
 सीप बना कमरा खाली कर दिया। यह आप के जद्दूमरे
 उद्देशों का ही प्रभाव था, कि बड़ा पड़ते मित्रों के कहने पर भी
 लाला जी तय्यार न हुए थे, अब अपने आप कमरे को खाली
 कर दिया। आप के उद्देशों का प्रभाव अच्छा पड़ रहा था, अतः
 आप ने बड़ा पूरा कल्प किया और बड़ी रीत डरही। आप की
 बड़ाई जैन समाज ने चतुर्मास की धिन्ती की, तो आप ने
 धर्मोपाधि अभी कुछ नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अभी होली
 चतुर्मास नहीं हुआ। जब होली चतुर्मास हो चुकेगा, तब जैसा
 करना होगा देखा जायगा।

रामां मण्डी

भरिलहा ने आप ने गमां मण्डी की
 और विहार किया कोई तीन मील हो
 गये होंगे कि आप के पाँव की ब्याइं में पीक पड़ गई। चलना
 दुश्कल हो गया परन्तु नशावाज की शनैः शनैः चलते गये और
 पञ्च मील की दूरी पर एक गाँव में जा ठहरे। रात्रि की पाँच
 की तकलीफ और बढ़ गई तब आप के शिष्यों ने धिन्ती की
 कि पाँव की ऐसी उपवेदना में चलना कठिन नहीं अपितु
 असम्भव है अतः आप आदेश करें तो हम आपको वापस
 भरिलहा या आगे रामा मण्डी वाली में बिठा कर ले चलें।
 किन्तु लुर्मान बाईं आप की पैरशक्ति और सहमति का इतना
 कट्टर होना भी उस देवता और करटक के उद्देशों के
 लाला जी के पैरज हो पाए करके के उद्देशों के उद्देशों के
 इस बाईं हक न देनी प्रसाद से बड़े मजबूत हुए हैं तब मुसल
 की बड़े प्रेम और भद्रा से सेवा करना है १०५ न २५० ३५

ले धर्मोपदेश होने रहे। उपदेशों को सुन कर वहाँ के
नेत्यानक के रही हुई बुद्धियों को दूर करने के लिये
या। वहाँ से बिहार बरफ आप दसवाली मण्टी तथा
एही की जनता को कृतार्थ करते हुए मोड़ मण्टी (भट्टिया
मण्टी) पधारे।

इ मण्टी यहाँ तीन बिरादरी के सेवक १० पर है
इतनी मोटी मण्टी होने पर भी आप
एर उपदेशों का ऐसा प्रभाव पड़ा कि जन लोगों ने भी
कमी का अनुभव करने हुए स्थानक परट्ट स्थापित
ले तीन हजार की रकम एकत्र कर ला। वहाँ से आप
मण्टी पधारे।

तमा मण्टी यहाँ भी कोई स्थानक न था। आप
ही के उपदेश हुए और उनका
एसा प्रभाव पड़ा कि मुटलाहा मण्टी वाले लाला रामजी
ने जो बिचिरकाल में यहाँ रहते हैं, अपने ही ने
कमाने का कार्य अपने जुम्मे ले लिया। यह दानवीरता
जबन उदाहरण है और दूसरों के लिये अनुकरणीय है।

यहाँ पर महाराज जी की राबलपिटडी से सूचना मिली
कि गौड़ जी की धर्मपत्रों आपने पृथक् पत्र की शुभ स्मृति
काय करना चाहती है। आपने उस देवी को कहला
ए जाति उदार का कोई कार्य बरादरी के परामर्श से
आदि। तब उस देवी ने बरादरी के परामर्श से
पत्नीम हजार के मुख्य की मण्टी उभार

अब उन्होंने एक तीन मण्टी का
न को दिला दिया है।

श्री महाराज का अन्तिम काल

एक मुखां सदा मुखा जाता है,

इत्सान आता है आवे मर जाता है ।

है शिन्दर व होर बहो नेह अछाम,

जो जानवे बुत बान भी कर जाता है ।

मृत्यु का ज्ञान निश्चित है । और कोई बात तो भूली
नहीं है, परन्तु मृत्यु ने निश्चय जाना है तोटा कपड़ा
कोई भी इसमें बच न रहा । एक न एक दिन यह समय
ही देवता ही पड़ता है । जो जाना है वसही मृत्यु कहर
गोह ।

और बचेगा कोई न दुनियां में जान लो,

मौत अरु दरार आलम व आलम अरु बरार मौत ।

अपक मनुष्य यह जानता है कि जमे मृत्यु ने एक दिन
यि का दण्डना है, तथापि वह अपने खान पान एष सात्कारिक
तो नै हो खान रखता है । आगे की कुछ चिन्ता नहीं करता,
ने जीवन के व्यय और लज्ज की आर नहीं दबता—

अब खबर गरम मौत व जान का है,

नाश तुम्हें फिर आये दान का है ।

हमों व लगे रहूँ इक दिन है फना

जाना तब दल न जान का है

यह तो ठाक है कि क'इ ता नानि आयु भोगे वर इस
का उदना है और व इश म ह' इस अगत से विदा हो

जाता है। सदा के लिए न कोई ठहरा है, न कोई ठहरा।
 इस असार में सार में करोड़ों, अरबों बाप और बेटे
 कोई भी छोटा अथवा बड़ा नहीं, अपना पाप न छोड़
 जो आया अथवा गया। हाँ एक तो इस प्रकार आये
 गए जैसे कि कीड़े मकड़ी, कुछे बिन्दुओं में जाते हैं
 जाते हैं। किसी को पता तक नहीं चलता। दूसरे, जो
 ये ऐसे महापुरुष जाते हैं, जिनकी मृत्यु पर लाखों
 और गांव गांव में खेद प्रकट किया जाता है। लाखों
 के हृदयों पर गहरी चोट जाती है और इस प्रकार
 शोक होता है। निसर्गदेह उनका मौलिक शरीर, जो
 मिट जाता है परन्तु उनका नाम अमिट बना रहता है।

जम रह गया यहां न यहां जम रह गया,
 दोनों को रह गया तो फलतः जान रह गया
 मरते नहीं हैं जिन्दा जाते हैं, जो शरीर,
 जेबों के साथ जिनका यहां नाम रह गया
 मस्तिष्क है अपनी सारे ही भाई पड़ने लगे,
 पैरों पर चल रहे नहीं पैरों में चल रहे

ज्ञानी क्या अज्ञानी सब को यह असार में
 पड़ा है। अज्ञानी जन अपने जीवन को व्यर्थ
 तथा पापों का भार अपने सिर पर ठठा कर बैठे हैं।
 ज्ञानी जन अपने जीवन का पूरा पूरा साम ठठा कर
 पुछ का पायेव अपने भाग में जाते हैं—

गर काल बरस जिये तो फिर मरना है,
 पैमाने समर एक दिन मरना है।
 हाँ केशव आचार्य मुझका कर से,
 गतिक दुःख दुनिया से सकल करवा



नेहला तो आप ने पानी से मुख साफ किया। डाक्टर स हथ
तं ही परन्तु कुछ न हुआ। तब आप ने दवाई लेने से इन्कार
किया और पानी तक भी प्रदण न किया। आप को शिष्य-
तो आप के पास ही बैठो थी, परन्तु आप किसी के लिये
न भी मोह न दिखा रहे थे, वे केवल ध्यान-मग्न थे और
अकार ध्यान में तल्लीन रहते हुए सुषवार की प्रातः साढ़े
बजे के समय स्वर्ग सिवार गए। आप भगवान महावीर के
। इच्छन्तोस चतुर्मासो को पूर्ण करके बयालीसवें के बीच में
स्वर्ग को प्राप्त हुए।

महाराज श्री के स्वर्ग सिधारने की सूचना गाँव गाँव एवं
नगर में तार तथा टेलीफोन द्वारा पहुँचाई गई। हर जगह
ने भी यह समाचार सुना, एक दम हल्ला-बल्ला रह गया।
बोली नहीं, तल्लीन नहीं, अकस्मात् सध ने यह खबर
। कई लोगों को तो सुनते ही इस सूचना पर विश्वास तक
आया, किन्तु विश्वास न करने से ही यह समाचार निध्या
। बन सकता था। आखिर विश्वास करना ही पड़ा। स्यालकोट,
हं, गुजरांवाला और नारोवाल-क्योंकि ये क्षेत्र पसरूर से
ने ही पहुँचे हैं इस लिये इन क्षेत्रों के लोग तो स्वर्गवास का
। खबर सुनते ही महाराज श्री के अन्तिम दर्शन करने के लिये
वार की-साय की ही आगए, और अगले दिन तो प्रत्येक
न की गयी ने आदम ही आदम आता चला गया। कोई
हूरावली-रहो से आ रहा है तो कोई अम्बाले से कोई जेडलम
आ रहा है तो कोई पटियाले से कोई लुधियाने से तो कोई
ग से और और से इस प्रकार जगह जगह से आप के
। पड़ाहु पनकर पहुँच गए कई दुराले बाले गए

या, परन्तु अब शीघ्र से आतिथित कर भी बना सकते हैं, और
इसका नियम का बन गया है। अब बल शीघ्र करके अथवा
भा आदि के कोई प्रस्ताव पास करने हुए रह जाते हैं, यद्यपि हम
ने अज्ञान अन्ध जो महाशक्ति मही बन सकते, तथापि उन के
जिन का समुदाय करके उनके द्वारा आरम्भ किये गये कार्य
तो भी बना सकते हैं तथा उन कार्यो को और आगे बढ़ा कर अपने
दिन को सफल बना सकते हैं।

ऐसी पवित्र और बल हस्ती के नाम से प्रेरित हो उठ जाने का सिद्ध
ने अर्थ होता है, परन्तु ऐसी पवित्र आत्माएं ही ही निर्वाण
ही अधिपति बन जाती हैं।

॥ आह ! महाशक्ति भी अज्ञान अन्ध जो ! ॥

क्यों आज है धमन में गुल्लो बगें अराधवार
क्यों हो रहा है रक्षा हर दुःख से आशवार ?
हम सब के दिल भी आज हैं क्यों शरीर बेकरार ?
क्यों हो रहा है चारों नौली प्राम बार बार
कृष्ण जिस का और जहां से था दिल गुदाश
रुद्र नरामे दयात थी जिस की नवाए राज
पीरीदा जिस के साज में था दर्द व सीजी साज
फिरत गुलन्द और दिल जिस का था पाक राज
बाए बांद राजदारे बतन आम उठ गया
बांद अन्धलाएं जार धमन आज उठ गया



महाराज श्री के विशेष गुण

दुनियाँ दुनो में इस को दुर्लभ मान ली,
 अब इन हैं बड़ी तम का इसी मान ली,
 दुर्लभ किन्तु बड़ी सुखद नदी साग ली,
 कोह पर है श्रद्धा जिस में आश्रय ली-

१. स्वास्थ्य और सौभाग्य--मनुष्य को चाहे तो
 यात्रा के लिये यह सुन्दर एवं योग्य शरीर चिज है ।
 जीवार्थ को मचारी दे । जिस प्रकार कोई व्यक्ति
 मचारी चरती न होने पर अपना कमजोर होने पर अपने
 पथ को मजबूत मजबूतता पूर्वक पार नहीं कर सकता ।
 प्रकार जिस मनुष्य का शरीर निर्योग तथा रोगग्रस्त हो
 अपनी जीवन यात्रा ठीक रूप से पार नहीं कर सकती ।
 लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य अपने शरीर का प्रयत्न
 उन बातों से बचने का पूरा पूरा प्रयत्न करे जो उसके
 लिये हानिकारक हैं ।

भी मजबूत मनुष्य जो महाराज अपने शरीर का
 रक्षक रखते थे । खान पान में कड़ी मर्यादा से बाधते
 प्रत्येक क्रिया पूरे अम्दाजे से करते थे । इसी कारण
 शरीर इतना सुखील था । यही कारण था कि वह
 पानी आदि में अनोख हाथ पूर्वक और बड़े देव देवों
 सेवा किया करते थे निर्योग तथा रोगा पुरुष को जो
 ही दिल नहीं चाहता । उनसे सेवा क्या करती है ।

निमित्त—महाराज की, निर्धन हो अथवा मनवान् हो सब
वृद्धि में देखते थे। वह न था कि अमीरों में हो मोट्टी मोट्टी
रत्न और चुरीयों में लालावाही बरैना। अमीर हो अथवा
निमित्त जो लुक्क होना था उसे बिना निमित्त वह देते
अन्यो बरना उन्हें स्वभाव में ही न था।

निमित्त—आप तो किसी साम्प्रदायिक पक्षधर या
नहीं थे न पड़ते थे। उही कारण है कि सब लोग आप की
बैठते थे। प्रष्ट रूप में ही आप स्थानस्थानियों व पूज्य
गुरु देवराजों की आप की पुरस्कर्ति से देखते थे।
बैठता मे दोनों सम्प्रदायों के बीच जो वैमनस्वभाव बढ़
था, आप के उपदेशों की सुन कर उन लोगों ने उसे
हो। अन्तर्गत में आप के पवित्र उपदेशों से प्रभावित
देवराजों भाइयों ने भी स्थानक के लिये दान दिया।
मे आप ने देवराजों के पुण्य भी आत्मनारायण जी
आप की शान्ति के अवसर पर उन की स्टेब पर आकर
मिन दिया। नरोवात में देवराजों ने आप के गुणों
की वन्दना में भूरी भूरी प्रशंसा की थी। इन बातों से आपकी
विश्व के हृद प्रभावित होते हैं।

चन्द्रमहने की शक्ति—एक बार आप भटिन्दा से रामानन्दजी
परि विहार कर रहे थे कि मार्ग में हा पाँव की ब्याई पक
ने के कारण आप बेचना हुईं चलना भी कठिन होगया।
मन किया गया कि आप का हाथ म भिठा कर लेजाया जाए,
परिन्तु वह हान हर भी आप न इनकार कर दिया।

हृदय—आप के मन में जब पुरुषार्थ के उदय से वैराग्य

जो बी की सेवा में समर्पित किए गए थे। वे इस प्रकार हैं—

धर्म का नूर

वृ १६७६ के नाभा चतुर्मास की ममाप्ति पर श्री सनातन धर्म सभा और स्थानीय सेवासमिति की ओर से पढ़ा गया अभिनन्दनपत्र]

प्रधान जी ! तथा उपस्थित सज्जनो !! मैं सनातनधर्म सभा सेवासमिति के सदस्यों की ओर से यह अभिनन्दन पत्र श्री जी महाराज की सेवा में उपस्थित करता हूँ।

सर्व प्रथम मैं जो कहना चाहता हूँ, वह यह है कि इस स्वामी जी महाराज ने नाभा में चतुर्मास करने की आज्ञा दी है, इसमें सेवासमिति का खबरदस्त हाथ है। हमारे प्रेम और दिली भावना को देख कर स्वामी जी महाराज ने पर अपार कृपा की और हम सब को सत्सङ्ग का लाभ दे। हम इसके लिये यावज्जावन आप भी के कृतज्ञ रहेंगे।

दूसरे जैसा कि शास्त्रों में महात्माओं के गुण बताए हैं, वे सब गुण वैराग्य, त्याग, शान्ति, मद्रूप्ये की चमक, चरित्र विचार विचार, विद्वत्ता, नम्रता, स्वाध्याय और सार स्वामी जी महाराज में पाए जाते हैं।

तीसरे—दिन हो या रात स्वामी जी महाराज का कोई समय नहीं देखा गया, जबकि वे स्वाध्याय न कर रहे हैं अथवा न कोई शिक्षा न देते हैं।

चौथे—सब से बड़ कर आप में श्री गुरु पाया । यह है कि प्रतिदिन दो दो घंटे लगातार आप वे ।

निष्पत्ति

[सम्बत् १९८७ मानेरकोटला के चतुर्मास में एव
 स्थानकबासी तथा देहराबासी समाज में बहुत
 अपने अपने देवों द्वारा शांति किया था। यह अभिनन्दन
 इसी समय का है और भी आत्मानन्द जैनसमाज
 और से भेंट किया गया है।]

सेवा में श्री श्री १००८ श्री लखानचन्द जी महाराज

यहां पर आपके शिष्य महर्षी सहित स्थान
 सब में जो प्रेम और सम्पत्ति की सहर हो गई है,
 की ही कृपा का फल है। आप बंधुओं में शान्ति-प्रिय,
 भावी तथा साम्प्रदायिक पक्षपात से रहित हैं। आप जो देव
 विचार समाज के लिये अत्यन्त लाभदायक तथा उपयोग
 हैं। यदि ऐसे विचार सारे साधु-समाज में हो जायें,
 आशा की जा सकती है कि जैन समाज जो इस
 मर की कमजोरियों एवं गड़बड़ों का प्रधान स्थान बना हुआ
 ऐसा कदापि नहीं रह सकता। जैन एसोसिएशन का इनमें कोई
 पधारण की ही शुभ स्मृति है। आशा है यह एसोसिएशन
 आज तक बनी रहेगी।

सेवक—

ता० १.११.३०. मन्त्री श्री आत्मानन्द जैन समाज शाली

समाज का दर्द अनुभव करने वाले

[सम्बत् १९८७ मानेरकोटला चतुर्मास में जैन एसोसिएशन
 और से समर्पित अभिनन्दन पत्र]

इस वर्ष श्री श्री १००८ श्री लखानचन्द जी महाराज
 अन्य मन्त्र महाराज व पधारण से श्री आत्मानन्द प्राप्त हुआ

६. दान विधा है करते सुबहो शाम हमें ।
अपने हाथों से वह दान दिताने ।
७. गिनती है इन की हिन्द के नेताओं में ।
दरिद्र और शम के फिसाने मिटाने ।
८. इमनियोजे मज्जहो मिश्रत से बहुत दूर है भार ।
प्रेम भक्ति से हमें अपना बनाने ।
९. हो मना स्वामी भक्ता मुक्त से बर्षा क्या बनही ।
धर्म की शमां से जब नूर दिताने का ।
१०. साकिनाने मुदताहा श्यामी के फरमान पे चली ।
हागा कट्याण मुन्दार। भारीपाँद उनका हा ।
१०. वमां ने फिकरे बनाए श्यामी की याद में ।
बन्दना नमस्कार मेरी बार बार मिर हो कु ।
धारे बाल बाल
- तारीख १२-११-३२ मुदताहा मरही जि

तारों में चान्द

। मम्बन् १३३५ रावतविण्डी चतुर्मास की म्मानि वा म
जेन अखाड़ा की ओर से मम्बन् ।

करा कि मैं मिक्तां बयान तेरी,

भा मज्ञान चन्द्र महाराज जी ।
अवस्था गुन अज्ञाने इस चमन चन्द्र,

नाल मिज्ञे न तेरे कोई गुन जी ।
पेट भूनि शान्ति की न दर आवे,

तर बिष बम नमाकार जी ।
न वर न वर नाक छोट क ने,

न वी दुमर न नू देर जी ।

書 局

管 帶 帶 帶 帶 帶

मम ह्येवमेव च.

ਭੀਮੋਂ ਕਰਕੇ ਬਲਦ ਡਿੱਗਾਂ ਨਾ ਜਾਵੇ ।

‘नर बंधा तैत न कर्ये कर्म’.

विदुषाणां वदन्ति यथा ब्रह्म वदन्ति ।

बन रहे हैं और मैं बन रहा हूँ।

हमारे अन्तर्गत अनेक अनेक हैं।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

है। वन का जल जल है।

एतद्भुजं न भवति न भवति न भवति.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सु सु वि. है लन ल.

सर्वे भूतानि भूयानि भूयानि भूयानि ।

1941

1. *Chlorophyll*

श्री गुरुभ्यो नमः

1000

॥ १ ॥

1944

10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044

7576 4-1 17. 22